दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

ट्रेजेडी क्वीन मीना कुमारी की 90वीं बर्थ एनिवर्सरी

7

3 माफिया विनोद को सता रहा मुठभेड़ का डर तलाश रहा समर्पण का रास्ता

5 2024 में 22 सांसदों के कट सकते हैं टिकट

8 विराट कोहली वेस्टइंडीज से स्पेशल चार्टर फ्लाइट से भारत लौटे

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 2 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 07 अगस्त, 2023

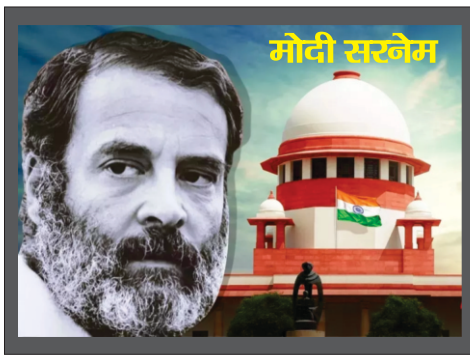

राहुल गांधी की सजा पर रोक

नई दिल्ली, एजेंसी। मोदी सरनेम मामले में राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने राहुल की सजा पर रोक लगा दी है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने गुजरात उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती दी थी। हाई कोर्ट ने आपराधिक मानहानि मामले में राहुल की सजा पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था। कोर्ट ने कहा कि जब तक अपील लंबित है, तब तक सजा पर अंतरिम रोक रहेगी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि बयान अच्छे मूड में नहीं होते हैं, सार्वजनिक जीवन में व्यक्ति से सार्वजनिक भाषण देते समय सावधानी बरतने की उम्मीद की जाती है। हालांकि, कोर्ट ने कहा कि राहुल को अधिक सावधान रखनी चाहिए थी।

कोर्ट ने की सख्त टिप्पणी

राहुल गांधी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने बहस शुरू की थी। सुप्रीम कोर्ट ने सिंघवी से कहा कि उन्हें सजा पर रोक के लिए आज एक असाधारण मामला बनाना होगा। सुप्रीम कोर्ट ने इस बीच कहा कि वे जानना चाहता है कि राहुल को अधिकतम सजा क्यों दी गई। कोर्ट ने कहा कि अगर जज ने १ साल ११ महीने की सजा दी होती तो राहुल गांधी अयोग्य नहीं ठहराए जाते। कोर्ट की टिप्पणी पर महेश जेठमलानी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने पहले राहुल गांधी को आगाह किया था जब उन्होंने कहा था कि राफेल मामले में शीर्ष अदालत ने प्रधानमंत्री को दोषी ठहराया है। उन्होंने कहा कि उनके आचरण में कोई बदलाव नहीं आया है।

सिंघवी ने दी ये दलील

मोदी सरनेम टिप्पणी मामले में राहुल गांधी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कई दलीलें दी। उन्होंने कहा कि शिकायतकर्ता पूर्णेश मोदी का मूल उपनाम श्मोदीश नहीं है और उन्होंने बाद में यह उपनाम अपनाया।

कोर्ट में दी गई दलीलें

सिंघवी- मानहानि केस की अधिकतम सजा दे दी गई। इसका नतीजा यह होगा कि ८ साल तक जनप्रतिनिधि नहीं बन सकेंगे।

पूर्णेश मोदी के वकील महेश जेठमलानी ने राहुल का बयान पढ़ा- सारे चोरों के नाम मोदी क्यों होते हैं? और ढूंढोगे तो और मोदी चोर निकल आएंगे।

जेठमलानी ने कहा कि क्या यह एक पूरे वर्ग का अपमान नहीं है? पीएम मोदी से राजनीतिक लड़ाई के चलते मोदी नाम वाले सभी लोगों को बदनाम कर रहे हैं।

मोदी सरनेम मामले में राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने राहुल की सजा पर रोक लगा दी है। हाई कोर्ट ने आपराधिक मानहानि मामले में राहुल की सजा पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था। राहुल गांधी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने उनका पक्ष रखा।

मोदी सरनेम मामले में राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली।

वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने रखा राहुल का पक्ष।

पूर्णेश मोदी के वकील महेश जेठमलानी ने सजा का किया था बचाव।

अधिकतम सजा क्यों दी

सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वो जानना चाहता है कि राहुल गांधी को अधिकतम सजा क्यों दी गई। अगर जज ने राहुल को 1 साल 11 महीने की सजा दी होती तो राहुल गांधी संसद की सदस्यता से अयोग्य नहीं घोषित होते।

लोकसभा चुनाव लड़ेंगे राहुल गांधी

राहुल गांधी को सूरत की अदालत ने दो साल की सजा सुनाई थी। सजा मिलने के बाद उन्हें लोकसभा की सदस्यता से अयोग्य ठहरा दिया गया था। सुप्रीम फैसले के बाद अब राहुल की सांसदी बहाल हो जाएगी। साथ ही अदालत के फैसले से ये भी साफ हो गया है कि राहुल अगले साल होने वाला लोकसभा चुनाव भी लड़ सकेंगे।

कांग्रेस में खुशी की लहर

राहुल गांधी को राहत मिलने के बाद कांग्रेस नेताओं में खुशी है। कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि यह खुशी का दिन है। मैं आज ही लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखूंगा और बात करूंगा।

सुप्रीम राहत के बाद बहाल होगी राहुल गांधी की सांसदी

अब २०२४ में लोकसभा चुनाव लड़ पाएंगे राहुल गांधी, बहाल होगी संसद की सदस्यताय सुप्रीम राहत के क्या हैं मायने

कांग्रेस के पूर्व सांसद राहुल गांधी को मोदी सरनेम मामले में सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी को मिली दो साल की सजा पर फिलहाल रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद राहुल गांधी की सांसदी बहाल होना तय है। वह मानसून सत्र में हिस्सा भी ले सकते हैं।

मोदी सरनेम मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी को बड़ी राहत मिली है। सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी की सजा पर फिलहाल रोक लगा दी है। कोर्ट ने सुनवाई के दौरान कहा कि उनकी दो साल की सजा पर फिलहाल रोक रहेगी।

राहुल गांधी की सजा पर रोक कांग्रेस ही नहीं, विपक्षी गठबंधन I-N-D-I-A के लिए भी राहत की खबर है। दरअसल, जनप्रतिनिधि कानून के तहत राहुल गांधी को दो साल की सजा सुनाए जाने के बाद उनकी सांसदी रद्द हो गई थी। अब सुप्रीम कोर्ट से सजा पर रोक के बाद राहुल की सांसदी बहाल हो सकती है। साथ ही वह, संसद के मानसून सत्र में हिस्सा भी ले सकते हैं।

अब 2024 में लोकसभा चुनाव लड़ पाएंगे राहुल गांधी, बहाल होगी संसद की सदस्यता, सुप्रीम राहत के क्या हैं मायने।

गहलोत सरकार ने जयपुर की मेयर मुनेश गुर्जर को किया बर्खास्त

पति के रिश्वत लेते पकड़े जाने पर हुई कार्रवाई

जयपुर, एजेंसी। पति का रिश्वत लेना जयपुर की मेयर मुनेश गुर्जर को भारी पड़ गया है। राजस्थान की अशोक गहलोत सरकार ने मेयर को ही बर्खास्त कर दिया है। पति को रिश्वत लेते पकड़े जाने के बाद अशोक गहलोत सरकार ने यह कार्रवाई की है। दरअसल, पति के रिश्वत लेने के मामले में मेयर भी जांच के घेरे में है, इसलिए सरकार ने कार्रवाई की है।

गहलोत सरकार ने आधी रात जारी किया आदेश

राजस्थान सरकार ने देर रात एक आदेश में जयपुर हेरिटेज नगर निगम की मेयर मुनेश गुर्जर को निलंबित करने का आदेश जारी किया। मेयर के पति सुशील गुर्जर को बीते दिन ही राज्य के भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (ब्ट) ने भूमि पट्टा जारी करने के बदले कथित तौर पर २ लाख रुपये की रिश्वत लेने के आरोप में गिरफ्तार किया था। मेयर को नगर निकाय सीट - वार्ड संख्या ४३ से भी निलंबित कर दिया गया है। बता दें कि मेयर के पति को मेयर के ही आवास पर रिश्वत लेते हुए पकड़ा गया था। उस दौरान मेयर भी वहीं मौजूद थीं और आवास से ४० लाख रुपये नकद बरामद किए गए थे। सरकार का कहना है कि मेयर भी इस भ्रष्टाचार में शामिल हो सकती हैं और मामले की जांच को प्रभावित कर सकती थी।

यह है पूरा मामला

एसीबी ने सुशील गुर्जर के साथ दो अन्य लोगों को भी गिरफ्तार किया है और उनसे दो दिनों तक पूछताछ जारी है। पुलिस में दर्ज शिकायत में दावा किया गया कि सुशील गुर्जर, अपने सहयोगियों- नारायण सिंह और अनिल दुबे के माध्यम से एक भूखंड के लिए पट्टे के आवेदन को जल्द मंजूरी देने के लिए शिकायतकर्ता से २ लाख रुपये की मांग कर रहा था। अधिकारियों ने शिकायत के आधार पर जाल बिछाया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

पीएम मोदी की पैनी निगाह, प्रदर्शन-रैलियां और कार्यकर्ताओं की बैठक का खुद ले रहे फीडबैक

राजस्थान भाजपा के नेताओं के मुताबिक, संसद के मानसून सत्र के खत्म होने के बाद प्रदेश में पीएम के तीन दौरे और हो सकते हैं। पीएम अगस्त में तीन स्थानों पर सभा या दौरे कर सकते हैं। इनमें एक स्थान खरनाल (नागौर) होगा, जहां वे वीर तेजाजी महाराज के मंदिर में पूजा-अर्चना करेंगे। इसके बाद उनकी दो सभा कोटा (हाड़ौती) और भरतपुर (ब्रज-मेवात) या जोधपुर (मारवाड़) संभाग में से किसी एक जगह पर हो सकती है। पीएम मोदी नवंबर २०२२ से अब तक राजस्थान में बांसवाड़ा (वागड़), सिरोही (गोडवाड़), अजमेर-पुष्कर (मेरवाड़ा), भीलवाड़ा (मेवाड़), दौसा (ढूंढाड़), बीकानेर (मारवाड़), सीकर (शेखावाटी) में आ चुके हैं।

सूत्रों ने बताया कि पार्टी के इस निर्णय के बाद पीएम राजस्थान में 7 सभाएं कर चुके हैं। आगे की तैयारियों को लेकर अब वे प्रदेश के दोनों सदनों के सांसदों के साथ 8 अगस्त को बैठक करने जा रहे हैं। आने वाले दिनों में कुछ वरिष्ठ विधायक और संगठन से जुड़े लोगों के साथ भी पीएम मोदी बैठक करेंगे और फीडबैक लेंगे...

राजस्थान विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे के साथ ही आगे बढ़ने जा रही है। यही नहीं प्रदेश का चुनावी अभियान अब पीएम मोदी की देखरेख में आगे बढ़ेगा। भाजपा ने अपने चारों शीर्ष नेताओं को चुनावी राज्यों की कमान सौंपने का फैसला किया है।

इसमें पीएम राजस्थान, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़, राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष तेलंगाना और राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा राजस्थान और छत्तीसगढ़ के चुनावी कामकाज देखेंगे। पार्टी के विश्वस्त सूत्रों ने बताया कि पार्टी के इस निर्णय के बाद पीएम राजस्थान में ७ सभाएं कर चुके हैं। आगे की तैयारियों को लेकर अब वे प्रदेश के दोनों सदनों के सांसदों के साथ ८ अगस्त को बैठक करने जा रहे हैं। आने वाले दिनों में कुछ वरिष्ठ विधायक और संगठन से जुड़े लोगों के साथ भी पीएम मोदी बैठक करेंगे और फीडबैक लेंगे। विधायकों की बैठक २५-२६ अगस्त के आसपास हो सकती है। पार्टी से जुड़े सूत्रों का कहना है कि आमतौर पर पीएम विधानसभा चुनाव में सक्रिय तौर पर प्रचार तो करते है, लेकिन चुनावी रणनीति पर सीधी निगरानी नहीं रखते हैं। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रदेश के प्रभारी, चुनाव प्रभारी और प्रदेशाध्यक्ष के जरिए ही रणनीति बनाई जाती है। लेकिन इस बार पार्टी कार्यकर्ता और संगठन को संदेश देना चाहती है कि पीएम भी संगठन के एक कार्यकर्ता की तरह ही होते हैं।

इसलिए पीएम बढ़ा रहे हैं राजस्थान में फोकस

राजस्थान में वसुंधरा राजे समेत चार बड़े केंद्रीय मंत्री, स्थानीय दिग्गज नेताओं को सीएम पद की दौड़ में माना जाता है। कांग्रेस पार्टी कई बार इसे लेकर भाजपा पर हमला बोलती है। बड़े नेताओं के बीच खींचतान खत्म करने के लिए पीएम मोदी स्वयं मोर्चा संभाल रहे हैं। पीएम के चेहरे और केंद्र की योजनाओं और रणनीति पर चुनाव लड़ा जाएगा। हिंदी पट्टी के राज्यों में राजस्थान अकेला ही ऐसा राज्य जहां भाजपा ने २०१४ और २०१६ के लोकसभा चुनावों में सभी २५ सीटों पर कब्जा किया था। पार्टी २०२४ के चुनावों में यह रिक र्ड कायम रखना चाहती है। सीएम गहलोत-पायलट विवाद और राज्य में सत्ता पलटने के रिवाज को देखते हुए पार्टी को उम्मीद है कि इस बार वह राज्य की सत्ता पर काबिज हो सकती है। इसलिए पीएम मोदी समेत भाजपा के दिग्गज नेता की राज्य में ताबड़तोड़ रैलियां हो रही हैं। राजस्थान के राजनीतिक इतिहास में यह पहला मौका होगा, जब भाजपा पीएम के चेहरे और केंद्र की योजनाओं के आधार पर विधानसभा चुनाव लड़ने का फैसला किया है। ई बार आंदोलन किए और विधानसभा का घेराव किया, लेकिन जयपुर प्रदर्शन के लिए पहली बार पीएम मोदी के निजी अकाउंट से ट्वीट कर आह्वान किया गया।

सम्पादकीय

गैर जिम्मेदारी की पराकाष्ठा

मेवात दंगों में झुलस रहे हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर के उस बयान को गैरजिम्मेदारी की पराकाष्ठा ही माना जायेगा जिसमें उन्होंने कहा है कि सरकार सभी लोगों की सुरक्षा की जिम्मेदारी नहीं ले सकती।

मेवात दंगों में झुलस रहे हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर के उस बयान को गैरजिम्मेदारी की पराकाष्ठा ही माना जायेगा जिसमें उन्होंने कहा है कि सरकार सभी लोगों की सुरक्षा की जिम्मेदारी नहीं ले सकती। प्रदेश की कानून-व्यवस्था के मामले में नाकाम और लाचार दिखलाई पड़ रहे श्री खट्टर का बयान उनकी जनसुरक्षा के प्रति घोर लापरवाही को भी दर्शाता है जो राज्य के नागरिकों के प्रति बुनियादी कर्तव्य है। मुख्यमंत्री खट्टर ने बुधवार को साफ कहा कि इसके लिए हमें माहौल को सुधारना पड़ेगा। हर व्यक्ति की सुरक्षा न पुलिस कर सकती है, न ही सेना कर सकती है। इसके लिए सामाजिक सद्भाव ठीक करना पड़ेगा। वे तो यहां तक कह गये कि किसी भी देश में आप चले जाएं हर आदमी की सुरक्षा वहां की पुलिस नहीं कर सकती पर इसके लिए वैसा माहौल बनाना पड़ता है। वैसे वे यह भूल गये कि सामाजिक सद्भाव को ठीक करना भी सरकार की ही जिम्मेदारी होती है।

मुख्यमंत्री का बयान स्तब्धकारी तो है लेकिन वह भारतीय जनता पार्टी की प्रशासन पद्धति के अनुरूप है जो हर अच्छी बात का श्रेय लेने में तो पीछे नहीं रहती परन्तु किसी भी असफलता से पल्ला झाड़ लेती है। पिछले ९ वर्षों से अधिक समय तक केन्द्र में सरकार चलाने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सम्भवतरू भाजपा प्रशासित सारे राज्यों के मुख्यमंत्रियों के लिये प्रेरणा स्रोत हैं। देश के अपूर्ण लक्ष्यों के लिये अपने पूर्ववर्ती प्रधानमंत्रियों को सभा-सम्मेलनों में दोषी ठहराने वाले मोदी अपनी नाकामियों पर या तो चुप्पी साध लेते हैं अथवा उनका ठीकरा विपक्ष पर फोड़ते हैं।

भाजपा सरकार का एक दशक का इतिहास अनेकानेक असफलताओं की जिम्मेदारियों से भागने या उनका दोषी दूसरों को बताने का रहा है। इसी का अनुसरण भाजपा की राज्य सरकारें करती हैं। नोटबन्दी और जीएसटी जैसे अविवेकपूर्ण निर्णयों से हुई देश की बदहाली का उत्तरदायी कोई नहीं है। यहां तक कि यह निर्णय किस प्रक्रिया के तहत लिया गया, यह भी अब तक अज्ञात है। कोरोना काल में अ क्सीजन, दवाओं, बिस्तरों के अभाव में हुई लाखों लोगों की मौत का उत्तरदायी कौन है, यह सवाल भी अब तक अनुत्तरित है। भाजपा की जिन राज्यों में सरकारें हैं वहां टूटती सड़कें और गिरते पुलों का जिम्मेदार कौन है, इसका जवाब ढूंढ़े से भी नहीं मिलेगा। उन राज्यों में होने वाली भगदड़ों से मरने वालों का जिम्मेदार भी कोई नहीं होता। भरी गर्मी में होने वाली आम सभाओं में दर्जनों लू से मर जाएं या बीमार हो जायें तो भी किसी व्यक्ति, अफसर, विधायक मंत्री या सरकार को दोषी नहीं ढहराया जा सकता क्योंकि यदि ऐसा किया भी गया तो बचाव में पूरी ट्रोल आर्मी उतर आती है। एक नहीं, सैकड़ों ऐसे मामले हो चुके हैं जिनमें दोषी या अपराधी सामने दिखता है परन्तु वह महफूज रहता है। इसका कारण यही है- उत्तरदायित्वहीनता।

हाल की कुछ घटनाएं भी इसी गैर जिम्मेदाराना रवैये की मिसालें हैं। मणिपुर की बात करें तो यहां पिछले कुछ वर्षों से आग सुलग रही थी। कुकी एवं मैतेइयों के बीच चल रही हिंसक झड़पों को पूरी तरह से वहां की सरकार और केन्द्र ने नजरंदाज ही नहीं किया वरन एक पक्ष के साथ खड़े होकर आग को भड़कने दिया। वहां अल्पसंख्यक कुकी लोगों को मारा गया, चर्च जलाये गये परन्तु डबल इंजन की सरकार चुप रही। मामला पहले तो विदेश तक पहुंचा और जब अमेरिका में बड़ी मजबूरी में प्रेस के सामने गये मोदी से इस बाबत प्रश्न किये गये तो उन्होंने यह बताने की बजाय कि उनकी सरकार स्थिति को सुधारने के लिये क्या कर रही है, यह समझाते रहे कि लोकतंत्र भारत के डीएनए में है। उन्हें तो यह बतलाना चाहिये था कि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र अपने अल्पसंख्यकों की सुरक्षा व विकास के लिये क्या कर रहा है।

देश के इतिहास के भीषणतम दंगों में से एक कहे जाने वाले घटनाक्रम के दौरान का ४ मई का वह वीभत्स वीडियो जब देश-दुनिया के सामने आया तो भी राज्य या सरकार का कोई व्यक्ति सामने नहीं आया। वहां के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने वैसे ही दिखावे का प्रकटीकरण करते हुए सार्वजनिक तौर पर अपना इस्तीफा दिया व प्रायोजित तरीके से एक समर्थक द्वारा फड़वाकर जेब में रख लिया, जैसे मोदी जी ने चलते सत्र में संसद के भीतर बयान देने की बजाय बाहर आकर ३६ सेकंड का वक्तव्य दिया जिसमें उन्होंने अपने क्रोध व पीड़ा का इजहार किया था। उसके बाद से आज तक संसद बार-बार विपक्ष की इस मांग को लेकर ठहर रही है कि पूरे घटनाक्रम पर विस्तृत चर्चा हो, लेकिन सत्ता दल इंकार कर रहा है और प्रधानमंत्री राजस्थान में सभाएं कर रहे हैं।

तो गृह मंत्री अमित शाह भी बराबरी के जिम्मेदार हैं वे कानून-व्यवस्था सुधारने की बजाय मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ में अगले चुनाव की तैयारी बैठकें कर रहे हैं। उलटे, संसद में गतिरोध के लिये भी वे मानते हैं कि विपक्ष ही जिम्मेदार है। अलबत्ता, जहां विपक्षी दलों की सरकारें हैं वहां एक चींटी भी मरे तो पूरी भाजपा, उनके समर्थक, मीडिया को क्षण भर में पता चल जाता है। तभी तो मणिपुर की घटनाओं की तुलना जब अन्य राज्यों से की गई तो सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने केन्द्र को जमकर फटकार लगाई। वैसे केन्द्र की हो या भाजपा की राज्य सरकारें- उन्हें इन सबका रत्ती भर फर्क नहीं पड़ता। इसलिये आश्चर्य नहीं होना चाहिये जब खट्टर जैसे सीएम साफ कर देते हैं कि सभी लोगों को सुरक्षा नहीं दी जा सकती। यह दीगर बात है कि ये उन्हीं मोदी के सबसे विश्वासपात्र लोगों में से एक हैं जो पीएम बनने के पहले कहते थे कि श्मैं हर बात के लिये एकाउंटेबल रहूंगा। एक बच्चा भी मुझसे सवाल कर सकता है और मैं जवाब दूंगा।

प्राइवेसी का सवाल

डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन बिल गुरुवार को लोकसभा में पेश कर दिया गया। सरकार ने साफ किया कि इसे भले ही फाइनेंस बिल के रूप में पेश किया गया हो, लेकिन यह मनी बिल नहीं है। इसका मतलब यह है कि राज्यसभा भी बराबरी के अधिकार के साथ इस पर विचार कर सकेगी। यह इस लिहाज से जरूर अच्छी बात मानी जा सकती है कि इससे विधेयक के अहम पहलुओं पर दोनों सदनों में विस्तार से चर्चा का मौका मिल सकता है, लेकिन यह भी ध्यान में रखना जरूरी है कि इस विधेयक के कानून का रूप लेने में पहले ही काफी देर हो चुकी है।

विधेयक का पहला प्रारूप २०१९ में ही पेश किया गया था। इसके कम से कम तीन रूप संसद में आ चुके हैं। वैसे इन कवायदों से गुजरने के बाद बिल के मौजूदा स्वरूप को कई दृष्टियों से बेहतर माना जा रहा है। इसके मुताबिक डेटा इकट्ठा करने वाली कंपनियों को न केवल यह बताना होगा कि वे कौन से डेटा ले रही हैं और उनका क्या इस्तेमाल किया जाना है बल्कि उन्हें डेटा प्रोटेक्शन आफिसरों की नियुक्ति करके उनके कान्टैक्ट डीटेल्स भी यूजर्स को मुहैया कराने होंगे। यूजर्स को अपने पर्सनल डेटा को बदलने या उन्हें डिलीट कराने का भी अधिकार होगा।

एक अन्य महत्वपूर्ण व्यवस्था परपस लिमिटेशन की है। लोग अक्सर अनजाने ही ऐसे भी डेटा उपलब्ध करा देते हैं, जिनकी डेटा कलेक्शन के घोषित मकसदों के लिहाज से कोई सार्थकता नहीं होती। उदाहरण के लिए, फूड डिलिवरी ऐप ग्राहकों के फोन नंबर भी कलेक्ट कर सकता है। मगर परपस लिमिटेशन का यह प्रावधान सुनिश्चित करता है कि फोन कान्टैक्ट लिस्ट ऐप की पहुंच से बाहर रहेगी।

ये प्रावधान दुनिया के अन्य देशों में लागू डेटा प्रोटेक्शन कानूनों से मेल खाते हैं। लेकिन फिर भी इस बिल से जुड़े दो पहलू खास तौर पर गौर करने लायक हैं। पहला तो यह कि बिल को अभी पूर्ण नहीं माना जा सकता क्योंकि इसका मुख्य आपरेटिव पार्ट अन्य बिलों या कानूनों के रूप में सामने आएगा, जो सरकार बाद में ड्राफ्ट करेगी। उदाहरण के लिए, डेटा इकट्ठा करने वाली कोई कंपनी लोगों से सहमति कैसे हासिल करेगी और विक्टिम को डेटा सुरक्षा भंग होने की जानकारी कैसे देगी। यह उन कानूनों से तय होगा जो अभी बनने वाले हैं।

गांधी को गायब करने की साजिश

फिर से हमला हुआ है और इस बार निशाने पर हैं, सर्व सेवा संघ प्रकाशन और गांधी विद्या संस्थान

– रमाकांत नाथ

यहां सर्व सेवा संघ प्रकाशन और गांधी विद्या संस्थान के साथ-साथ सर्वोदय जगत पत्रिका के कार्यालय, आचार्य विनोबा हाउस, जया-प्रभा पुस्तकालय आदि भी हैं। जयप्रकाश नारायण ने अपनी पत्नी प्रभावती देवी के साथ यहां लंबा समय बिताया था। कई गांधीवादियों ने अपना बचपन और युवावस्था यहीं बिताई। वैकल्पिक तकनीक के विचारक ईएफ शूमाकर ने अपनी प्रसिद्ध किताब स्म ल इज ब्यूटीफुल यही बैठकर लिखी। फिर से हमला हुआ है और इस बार निशाने पर हैं, सर्व सेवा संघ प्रकाशन और गांधी विद्या संस्थान। उत्तरप्रदेश के वाराणसी स्थित ये दोनों गांधीवादी संस्थाएं आखिरकार केंद्र और राज्य सरकारों की असहिष्णुता का शिकार हो ही गईं। १९९९ से शुरु हुई गांधी दर्शन को खत्म करने की कोशिश २२ जुलाई २३ को गांधी-विनोबा-जयप्रकाश के दर्शन की हत्या के साथ पूरी हो गई। सर्व सेवा संघ प्रकाशन की लगभग ५ लाख किताबें और अन्य फर्नीचर सड़कों पर फेंक दिये गये। वहां कई वर्षों से रह रहे गांधी के अनुयायियों, स्वतंत्रता सेनानियों को विस्थापित किया गया। सर्व सेवा संघ प्रकाशन और श्गांधी विद्या संस्थानश समेत ४ संग्रहालयों और करीब ८४ आवासों पर यह हमला दरअसल एक सुनियोजित साजिश है।

गौरतलब है कि ३० जनवरी, १९४८ को गांधीजी की मृत्यु के बाद, सर्वोदय दर्शन का प्रचार करने के लिए श्सर्व सेवा संघश यानी अखिल भारतीय सर्वोदय मंडल नामक संगठन का गठन किया गया था। राष्ट्रपति ड . राजेंद्र प्रसाद के संरक्षण में बनी यह संस्था पूरे देश में काम कर रही है। १९६० में विनोबा भावे की सलाह पर राजघाट, वाराणसी में ही सर्व सेवा संघ का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ किया गया। इसी तरह, जयप्रकाश नारायण, नवेंष्ण चौधरी और आचार्य नरेंद्र देव ने वहां गांधी विद्या संस्थान की स्थापना की थी। असल में १९९९ से ही भाजपा सरकार ने गांधी दर्शन को खत्म करने की कोशिश की थी। उस समय गांधी-विनोबा-जयप्रकाश विचार की लगभग १० पत्रिकाओं का प्रकाशन-लाइसेंस केंद्र सरकार ने रद्द कर दिया था। देश में विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित सैकड़ों गांधीवादी पत्रिकाओं में से १० पत्रिकाओं के लाइसेंस रद्द करने के पीछे की योजना इन पत्रिकाओं के माध्यम से प्रचारित गांधीवादी विचारधारा को नुकसान पहुंचाना था। ओडिशा से प्रकाशित होने वाली ओडिया भाषा की सर्वोदय और अंग्रेजी भाषा की विजिल पत्रिकाओं के लाइसेंस भी रद्द कर दिए गए। मैं तब सर्वोदय पत्रिका के संपादक और विजिल पत्रिका के प्रबंध संपादक के रूप में कार्यरत था। इन दोनों पत्रिकाओं की ओर से केंद्र सरकार के खिलाफ ओडिशा हाईकोर्ट में मनमोहन चौधरी ने केस दायर किया गया था और उनकी मृत्यु के बाद मुझे उस केस में पक्षकार बनना पड़ा। हमारी ओर से वरिष्ठ वकील समरेश्वर मोहंती केस लड़ रहे थे। हाईकोर्ट का अंतरिम फैसला हमारे पक्ष में गया। कोर्ट ने केंद्र सरकार की आलोचना करते हुए रद्दीकरण आदेश पर रोक लगा दी।

इसके बाद केंद्र सरकार ने उत्तरप्रदेश में गांधी विद्या संस्थान को बंद करने की योजना बनाई। केंद्र के आदेश पर उत्तरप्रदेश की भाजपा सरकार ने गांधी विद्या संस्थान को मिलने वाला अनुदान रोक दिया था। गांधी विद्या संस्थान, जो गांधीवादी विचारों का एक अनुसंधान केंद्र था, को बंद करने और गांधी के दर्शन को दफन करने की योजना बनाई गई, लेकिन केंद्र सरकार की यह योजना भी तब सफल नहीं हो सकी। उत्तरप्रदेश में भाजपा के बाद सोशलिस्ट-पार्टी की सरकार बनी, उसने तुरंत गांधी विद्या संस्थान को पिछले सभी बकाया अनुदानों का भुगतान कर दिया और अनुदान पहले की तरह जारी रखा।

विफल होने के बाद, केंद्र सरकार ने वाराणसी में गांधी विद्या संस्थान सहित सर्व सेवा संघ प्रकाशन को बंद करने की योजना बनाई। उत्तर रेलवे द्वारा लगभग ८ एकड़ के क्षेत्र को खाली करने के लिए एक नोटिस जारी किया गया, लेकिन २००४ में बीजेपी सरकार के पतन के बाद यूपीए सरकार ने इस नोटिस को नजरअंदाज कर दिया। बाद में भाजपा सरकार के नोटिस को केंद्र सरकार, उत्तरप्रदेश सरकार और रेलवे ने दोबारा उजागर करके भाजपा की पिछली योजना को सफलतापूर्वक लागू कर दिया। सर्व सेवा संघ प्रकाशन ने रेलवे के नोटिस के खिलाफ इलाहाबाद उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया और कानूनी सहारा लिया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने जिला प्रशासन से रिपोर्ट मांगी और वाराणसी जिला प्रशासन ने रिपोर्ट दी कि जिस जमीन पर श्गांधी विद्या संस्थान,श श्सर्व सेवा संघ प्रकाशनश काम करता है वह उत्तर रेलवे की है। इसके खिलाफ गांधी विद्या संस्थान, सर्व सेव संघ प्रकाशनश सुप्रीम कोर्ट गये, लेकिन सुप्रीम कोर्ट में केंद्र सरकार की दलील उत्तर रेलवे के पक्ष में गई और जमीन से संबंधित सभी दस्तावेजों को अस्वीकार्य दिखाए जाने के कारण सुप्रीम कोर्ट ने मामले को खारिज कर दिया। यहां सर्व सेवा संघ प्रकाशन और गांधी विद्या संस्थान के साथ-साथ श्सर्वोदय जगतश पत्रिका के कार्यालय, आचार्य विनोबा हाउस, जया-प्रभा पुस्तकालय आदि भी हैं। जयप्रकाश नारायण ने अपनी पत्नी प्रभावती देवी के साथ यहां लंबा समय बिताया था। कई गांधीवादियों ने अपना बचपन और युवावस्था यहीं बिताई। वैकल्पिक तकनीक के विचारक ईएफ शूमाकर ने अपनी प्रसिद्ध किताब स्म ल इज ब्यूटीफुल यही बैठकर लिखी। आरोप है कि सरकार जमीन पर कब्जा कर उसे क रपोरेट माफिया को सौंपने की योजना बना रही है। इस संबंध में समाजवादी जन परिषद से जुड़े अफलातून देसाई कहते हैं, प्रशासन मनमाने ढंग से काम कर रहा है। अगर कार्रवाई हुई तो मैं देशभर में सत्याग्रह करूंगा।

इसी तरह जेएनयू के पूर्व प्रोफेसर आनंद कुमार ने एक वीडियो जारी कर कहा कि इसे भारत के इतिहास की सबसे शर्मनाक घटना के तौर पर याद किया जाएगा। उन्होंने कहा, श्सर्व सेवा संघश और श्गांधी विद्या संस्थानश के प्रकाशनों को जब्त करने के लिए पुलिस अपने दल-बल के साथ पहुंची है और बलपूर्वक इस महत्वपूर्ण संस्थान को सरकार के हाथों में लेने की कोशिश कर रही है। यह गांधी और जेपी की विरासत पर सीधा हमला है। सर्व सेवा संघ प्रकाशन गांधी साहित्य प्रचार पर काम कर रहा है, जबकि गांधी विद्या संस्थान गांधी दर्शन पर शोध कर रहा है। इन दोनों संस्थाओं को जरूरत के समय खत्म करने की सत्ताधारी पार्टी की कोशिश बेहद चिंताजनक है। यदि काशी रेलवे स्टेशन के विस्तार के लिए वाराणसी में वह स्थान आवश्यक है तो सर्व सेवा संघ प्रकाशन और गांधी विद्या संस्थान के लिए अन्यत्र ऐसी ही व्यवस्था कर उन दोनों संस्थानों को वहां से हटाया जा सकता था, लेकिन वैसा नहीं हुआ। आखिर २००३ में फेल हुई केंद्र सरकार की योजना अब कैसे सफल हुई? इस बार केंद्र सरकार ने सर्व सेवा संघ प्रकाशन और गांधी विद्या संस्थान के साथ गांधी दर्शन को दफन करने का सही समय ढूंढ लिया है। सर्व सेवा संघ प्रकाशन और श्गांधी विद्या संस्थान जैसी पवित्र संस्थाओं के पतन के लिए अंततः यही सत्ता और उसके पथभ्रष्ट लोग जिम्मेदार हैं।

दोस्तों के बीच दरिंदे भी हैं, जिंदगी तबाह होने के बाद समझ रहीं बेटियां

गोरखपुर। जमाना तेजी से बदल रहा है और होड़ की दौड़ के बीच रिश्ते-नातों का महत्व भी। बड़ों की लाख हिदायत पर भी कुछ बेटियां कई बार लापरवाही कर बैठती हैं। फिर दोस्तों के हाथों तबाह होने के बाद समझने को उनके पास कुछ रह नहीं जाता है। ऐसी पीड़ा बच्चियों की है। उनके परिजनों का जीवन भी बच्चियों की जरा सी नादानी के चलते नरक बन चुका है। परिजन कहते हैं कि बेटियां समझ नहीं पा रहीं कि उनके दोस्तों के बीच में दरिंदे भी हैं, इसलिए मां-बाप के रोकने-टोकने पर नाराज होने की नहीं, सावधानी बरतने की जरूरत है।

दोस्त के भरोसे ने नरक बना डाली जिंदगी

उसकी उम्र महज १६ साल है। बुलाने पर डरी-सहमी आई। छले जाने से चेहरा पीला पड़ गया है। बहुत कुरेदने पर इतना ही बोली- कौन सा दोस्त, दरिंदा कहिए। मेरी तो पूरी जिंदगी तबाह हो गई। दोस्त पर भरोसा किया। उससे मिलने गई। वहां उसने अपने दोस्तों के साथ मिलकर दरिंदगी की। उस वारदात के बाद से आज भी घरवालों से नजर नहीं मिला पाती हूं। घटना के बाद से ही सहेलियों और रिश्तेदारों ने भी मुंह फेर लिया है। सबका व्यवहार ऐसा बदल गया है कि अब जीने का मन ही नहीं करता..। बस इतने ही शब्द निकले थे कि पीड़िता की आंखों से आंसू टपकने लगे। इसी बीच उसके पिता आ गए और उसे अंदर लेकर जाने लगे। वह दहाड़े मारकर रोने लगी। कुछ देर बाद पिता बाहर निकले। कहा- अब रहने दीजिए। बड़ी मुश्किल से इलाज के बाद ठीक हुई है। कुछ दिन ननिहाल भी भेजा था, लेकिन वहां पर भी मन नहीं लगा तो घर ले आए। बेटी के साथ जो हुआ, वह सिर्फ उसकी पीड़ा नहीं, बल्कि पूरा परिवार उसे झेल रहा है। अब तो हालात ऐसे बदल गए है कि किसी से कहासुनी भी हो जाए तो पड़ोसी, बेटी पर लांछन लगा देते हैं।

तबाह हो चुकी बेटी से कहता हूं-रोए नहीं, डटकर लड़े

यह दर्द चिलुआताल इलाके की एक युवती का है। १४ मई की रात में एक बजे के करीब उसे दोस्त ने घर के बाहर मिलने के लिए बुलाया था। वह अपने दो दोस्त के साथ गांव के तालाब किनारे लेकर गया। फिर दो लोगों ने युवती के साथ दरिंदगी की। किसी तरह से दरिंदों के चंगुल से छूटकर आई युवती ने घरवालों को आपबीती बताई थी। इसके बाद पुलिस ने केस दर्ज कर सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भिजवा दिया। लेकिन इस घटना ने पूरे परिवार को झकझोर दिया है। पिता बताते हैं- दोस्ती की भनक तो थोड़ा पहले से ही थी। बेटी को समझाने की कोशिश भी की थी, लेकिन समझ में तब आया, जब उसका ही नहीं हमारा भी सबकुछ तबाह हो गया। आज जिंदगी का मकसद यही है कि आरोपियों को सजा मिले। इसके लिए बेटी को भी समझाता हूं कि वह पीछे न हटे और रोए नहीं, बल्कि डटकर लड़े।

शौक को समझने वाला दोस्त भी मिला, लेकिन सब बर्बाद हो गया

गीडा की यू-ट्यूबर सिसक रही थी। मोबाइल देखते ही उसे बंद करने की गुहार और फिर खुद के साथ हुई दरिंदगी की आपबीती बताने पर राजी हुई। उसने बताया, सब कुछ ठीक था, जिंदगी हंसी-खुशी चल रही थी। उसके रील्स बनाने के शौक को पूरा करने वाला एक साथी भी मिल गया। हम दोनों साथ ही रहते हैं। एक दूसरे को समझते हैं। जेल जा चुके प्रदुमन से कोई खास मुलाकात नहीं थी। राजघाट पर रील्स बनाते समय मिली जरूर थी। राजघाट पर जब उसने आकर अ टो रोका और चालक से मारपीट करते हुए उसे जबरन उतारने लगा तो वह हैरान रह गई। बोली- यह क्या कर रहे हो। बोला कि कुछ नहीं, तुमसे मिलना है बस। फिर उसने जो किया, मत पूछिए। जिंदगी भर न भूलने वाली उस रात में जो हुआ, सब खत्म सा लगने लगा था। लेकिन उसी वक्त मैंने सोच लिया था, किसी को छोडूंगी नहीं। आज भी बोल रही हूं, सजा दिला के ही रहूंगी। युवती कहती है, जिंदगी में एक ही बात की तसल्ली है कि दोस्त इतना सब कुछ होने के बाद भी मुझे समझ रहा है, नहीं तो खुदकुशी के अलावा कुछ नहीं बचता। पुलिस ने सभी आरोपियों को जेल भेजा है, सजा दिलाने तक लड़ूंगी..।

पहले भी हो चुकी हैं घटनाएं

११ सितंबर २०२२: रेलवे स्टेशन पर कूड़ा बीनने वली एक युवती से तीन युवकों ने सामूहिक दुष्कर्म किया था। इस मामले में भी एक युवक से उसकी दोस्ती थी। उसके साथ वह प्लेटफार्म से दूर झाड़ी के पास बैठकर बातचीत कर रही थी कि उसके दो दोस्त और आ गए और सबने मिलकर दुष्कर्म किया था। पुलिस ने सभी आरोपियों को जेल भेजा था।

२३ मई २०२२: शहर के एक होटल में मुंहबोले भाई के बुलाने पर आई युवती को कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ पिलाकर सामूहिक दुष्कर्म की कोशिश का मामला सामने आया था। पुलिस को बाद में जांच में पता चला था कि युवती को कमरे में उसका दोस्त ही लेकर गया था।

१६ फरवरी २०२०: रेलवे स्टेशन के एक होटल में वाराणसी से आए एक दवा कंपनी के एरिया मैनेजर ने अपने दोस्तों के साथ युवती से सामूहिक दुष्कर्म किया था। युवती का एक एमआर से दोस्ती थी। वह नौकरी दिलाने का झांसा देकर होटल के कमरे में लाया था, फिर तीन लोगों ने सामूहिक दुष्कर्म किया था। पुलिस ने सभी आरोपियों को जेल भेजा था।

माफिया विनोद को सता रहा मुठभेड़ का डर तलाश रहा समर्पण का रास्ता

गोरखपुर। गोरखपुर के अंडरग्राउंड क्राइम में शामिल ५० हजार का इनामी माफिया विनोद उपाध्याय को खोजने में पुलिस को अब तक नाकामी ही हाथ लगी है। खबर है कि उसे मुठभेड़ का डर सता रहा है। वह समर्पण करने के लिए तैयार है, लेकिन उसकी योजना नहीं बन पा रही है। शनिवार को आईजी जे. रविंद्र ने जोन के सभी एसपी के साथ मीटिंग कर गैंगस्टर व माफिया पर की गई कार्रवाई की समीक्षा की और माफिया विनोद को जल्द दबोचने के निर्देश दिए। जानकारी के मुताबिक, गुलरिहा थाने में जमीन पर जबरन कब्जा करने का मामला सामने आने पर रंगदारी का केस दर्ज किया गया था। माफिया विनोद और उसके भाई संजय उपाध्याय को आरोपी बनाया गया। इसके बाद ही माफिया राकेश यादव, अजीत शाही जैसे बदमाशों पर भी पुलिस ने कई केस दर्ज किए। पुलिस ने घेराबंदी की तो माफिया अजीत शाही वकील के वेश में कोर्ट में हाजिर हो गया तो माफिया सुधीर सिंह महराजगंज कोर्ट में हाजिर हो गया था। बाद में राकेश यादव भी जेल चला गया।

पुलिस ने इनकी अवैध संपत्ति पर बुलडोजर चलवा दिया। विनोद के भी कब्जे पर बुलडोजर चल गया, लेकिन पकड़ में नहीं आया। इस बीच दबाव जब बढ़ा तो उसने दो बार बस्ती कोर्ट में आत्मसमर्पण की कोशिश की, लेकिन पुलिस ने घेराबंदी कर दी थी। फिर खबर आई कि माफिया ने नेपाल का रास्ता पकड़ लिया है। पुलिस भी मान रही है कि उसने गोरखपुर के आसपास ही ठिकाना बनाया है, फिर भी पुलिस दबोच नहीं पाई है। बताया जा रहा है कि कुछ लोगों की मदद से अफसरों तक से उसने संदेह भेजा है कि उसे हाजिर हो जाने दिया, उसका एनकाउंटर न कर दिया जाए।

एसएसपी बोले-माफिया की दबोचें गर्दन, कोर्ट में पैरवी भी

गोरखपुर। एसएसपी डा . गौरव ग्रोवर ने भी अफसरों के साथ बैठक कर माफिया पर की गई कार्रवाई और कोर्ट में पैरवी की समीक्षा की। एसएसपी ने दो टूक कहा, माफिया की गर्दन दबोचें और कोर्ट में पैरवी कर सजा दिलाने में ढिलाई न करें। दरअसल, एसएसपी ने सभी माफिया के लिए एडिशनल एसपी को नोडल बना दिया है, जो गिरफ्तारी से लेकर विवेचना पूरी कराने और कोर्ट में सरकारी अधिवक्ता की मदद से पैरवी तक की मॉनीटरिंग करेंगे। इसी को लेकर शनिवार को एसएसपी ने बैठक की है।

गोड़धोइया नाला - एमएलसी ने सुनीं लोगों की समस्याएं, दिया मदद का भरोसा

गोरखपुर। गोड़धोइया नाला के जीर्णोद्धार से प्रभावित लोगों की पीड़ा सुनने के लिए भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष, एमएलसी धर्मेंद्र सिंह शनिवार की शाम मुहल्लों में पहुंचे। लोगों के साथ बैठक कर नाला और मकानों के बारे में जानकारी ली। एमएलसी ने स्थानीय लोगों की पीड़ा सीएम तक पहुंचाने का भरोसा दिया। गोड़धोइया नाला के दोनों किनारों पर मेडिकल कालेज से लेकर रामगढ़ताल तक करीब ५०० से अधिक मकान बने हैं। नाले के जीर्णोद्धार के लिए मैत्रीपुरम, सरस्वतीपुरम, शक्तिनगर, राजनगर, सेमरा नंबर एक, हरिसेवकपुर नंबर दो, शाहगंज, आदित्यपुरी, न्यू मार्डन कालोनी और तुलसीराम बिछिया के ५०० से अधिक मकानों पर निशानदेही की गई है। इन मकानों को नाले की ओर से आधे से अधिक हिस्सा तोड़ा जाएगा। मकानों के टूटने के बाद लोग बेघर हो जाएंगे। इससे परेशान लोग जनप्रतिनिधियों से मिलकर नाले का चौड़ाई कम करने की मांग कर रहे हैं।

सीनीय लोगों ने शुक्रवार की शाम भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष, एमएलसी धर्मेंद्र सिंह से मुलाकात की।

इसके बाद उन्होंने मुहल्ले में जाकर वास्तविक स्थिति जानने की बात कही। शनिवार की शाम करीब चार बजे एमएलसी मैत्रीपुरम में पहुंचे। उन्होंने यहां जुटे लोगों से बारी-बारी बात की। इसके बाद मकानों के पीछे जाकर नाले का जायजा लिया। मैत्रीपुरम और बिछिया में प्रभावित हो रहे मकानों को देखकर एमएलसी ने उचित मदद का भरोसा दिलाया। इसके लिए एमएलसी ने प्रभावितों की तरफ से एक पत्र देने को कहा। इस दौरान करीब दो घंटे तक स्थानीय लोगों के बीच एमएलसी मौजूद रहे।

चौड़ी सड़क और सुंदरीकरण शासकीय धन का दुरुपयोग : देवेंद्र सिंह

गोरखपुर। गोड़धोइया नाला से प्रभावित लोगों के मामले में संवेदनशीलता और मानवीय ष्टिकोण के साथ समस्या का समाधान करने के लिए एमएलसी देवेंद्र सिंह ने डीएम को पत्र लिखा है। अपने पत्र में उन्होंने कहा कि शासकीय सेवा से

रिटायर होने के बाद तमाम लोगों ने जीवन की जमापूंजी लगाकर मकान बनवाया है। लोगों के पास ऐसा कोई स्रोत नहीं है, जिससे दोबारा मकान बनवा सकेंगे। उन्होंने कहा है कि नाले के दोनों तरफ चौड़ी सड़क और सुंदरीकरण शासकीय धन का दुरुपयोग है।

एमएलसी ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल की ओर से रामगढ़ताल के किनारे बसे नागरिकों को ५०० मीटर के बजाय ५० मीटर की दूरी तक सीमित रखने के आदेश का हवाला दिया। एमएलसी ने खोराबार टाउनशिप एवं मेडिसिटी योजना का जिक्र करते हुए कहा कि सीएम ने सार्वजनिक घोषणा की है कि किसी को विस्थापित किए बिना योजना बनाई जाए। इसे आधार मानकर गोड़धोइया नाला का सुंदरीकरण निरस्त करना चाहिए। उसकी जगह शुरुआत में १० मीटर और अंत में २० मीटर तक पक्का नाला बनाने की बात एमएलसी ने कही। एमएलसी ने कहा है कि नाले के दोनों ओर सड़क बनाने से कोई व्यापार, कोई रोजगार नहीं बढ़ेगा। इससे कोई आकर्षण भी नहीं बढ़ेगा। इस रास्ते से सिर्फ सफाईकर्मी ही जा सकेंगे।

संसद के गलियारे में वरुण और डिंपल यादव की मुलाकात- 2024 में अखिलेश को मिल सकता है वरुण का साथ, पहले भी कर चुके हैं सपा प्रमुख की तारीफ

लखनऊ। संसद भवन के गलियारे की एक तस्वीर आज बहुत चर्चा का विषय बनी हुई है उस तस्वीर के बहुत से सियासी मायने निकाले जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश के राजनीतिक जानकार इसके नए समीकरण भी देख रहे हैं। ये तस्वीर है पीलीभीत से भाजपा सांसद वरुण गांधी और मैनपुरी की सांसद डिंपल यादव की मुलाकात की। दोनों मानसून सत्र में हिस्सा लेने के लिए संसद भवन पहुंचे हुए हैं। बृहस्पतिवार को दोनों के बीच कुछ मिनट बातचीत भी हुई। डिंपल यादव एक दिन पहले ही सपा की लखनऊ में हुई एक प्रमुख बैठक में शामिल होने के बाद दिल्ली पहुंची हैं। वरुण और डिंपल की इस मुलाकात को सपा से बढ़ती नजदीकी से जोड़कर देखा जा रहा है। अपनी ही पार्टी के खिलाफ मोर्चा खोलने वाले सांसद वरुण गांधी पहले भी सपा मुखिया अखिलेश यादव की तारीफ कर चुके हैं। माना यह भी जा रहा है कि अखिलेश यादव वरुण को सपा में शामिल कर बीजेपी को जवाब देने की कोशिश कर सकते हैं। क्योंकि हाल ही में सपा के कई साथी अखिलेश का साथ छोड़कर बीजेपी में शामिल हो चुके हैं। वरुण खुद भी अपनी ही पार्टी के खिलाफ मुखर हैं। सियासी गलियारों में उनकी टिकट कटने की चर्चाएं भी होती रहती हैं।

डिपल यादव की भूमिका भी पार्टी में बढ़ रही

अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव खुद भी पार्टी के लिए मिशन-२४ के लिए जुट गई हैं। एक दिन पहले ही यानी मंगलवार को ही उन्होंनें पार्टी की एक प्रमुख बैठक में हिस्सा लिया। सामान्यतरू पार्टी की मीटिंग से बाहर रहने वालीं मुलायम परिवार की बहू डिंपल प्रवक्ताओं की इस बैठक में पार्टिसिपेट करती नजर आईं। उन्होंने सपा की महिला विंग की राष्ट्रीय अध्यक्ष जूही सिंह के साथ बात की। मौजूदा सियासी मुद्दों पर मंथन किया। इस दौरान उन्होंने अपने विचार भी रखे। पार्टी की महिला विंग को मजबूत करने की बात कही। भाजपा की महिलाओं की जो स्ट्रेटजी है उसी के आधार पर सपा की भी महिलाओं के प्रति रणनीति बनाने की बात कही। इस महत्वपूर्ण बैठक के बाद दिल्ली पहुंचकर वरुण गांधी से मुलाकात कर बातचीत करने के मायने निकाले जा रहे हैं। माना जा रहा है कि डिंपल वरुण और अखिलेश की मुलाकात भी करवा सकती हैं। ताकि २४ को लेकर कोई बड़ा फैसला किया जा सके। डिंपल खुद भी पार्टी में अब मजबूत भूमिका अदा करती दिखाई दे रही हैं। ऐसे में दो सियासी घरानों की मुलाकात सियासत का नया रास्ता खोल सकती है।

वरुण गांधी कर चुके हैं अखिलेश यादव की तारीफ

वरुण ने पिछले दिनों सपा प्रमुख अखिलेश यादव की तारीफ की थी। उन्होंने कहा था, "मैं किसानों की आत्महत्या के मामले में कुछ करना चाहता था। मैं पूरा प्रदेश घूम रहा था, उस समय अखिलेश यादव की सरकार थी, मैंने उन्हें पत्र लिखा, अखिलेश यादव ने बड़ा मन दिखाया उन्होंने अधिकारियों को किसानों का डेटा उपलब्ध करवाने के लिए कहा। अखिलेश ने परेशान किसानों की मदद भी की।" पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश की तारीफ से सियासी गलियारों में यह चर्चा जोर पकड़ रही थी कि क्या वरुण ने यूपी में दूसरा विकल्प तलाश लिया है। हालांकि तब तो सपा से कोई बात नहीं हुई लेकिन अब डिंपल से मुलाकात के बाद फिर से सियासी चर्चाएं गरफ हो गई हैं।

अपनी ही पार्टी के खिलाफ मोर्चा खोले हैं वरुण गांधी

भाजपा सांसद वरुण गांधी लंबे समय से अपनी ही पार्टी के खिलाफ मुखर दिखाई दे रहे हैं। ंषि कानूनों के खिलाफ, युवाओं को नौकरी और किसानों की समस्याओं पर वो अपनी ही पार्टी को घेर रहे हैं। तीन ंषि कानूनों के खिलाफ किसान आंदोलन हुआ तो वरुण खुलकर किसानों के समर्थन में उतर गए। इस मुद्दे पर वो अपनी ही सरकार को घेरने लगे। उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को गन्ने का समर्थन मूल्य चार सौ रुपए करने की मांग करते हुए पत्र लिखा। जब गन्ने के मूल्य में २५ रुपए की बढ़ोतरी हुई, तो उसे ५० रुपए प्रति क्विंटल करने का पत्र लिख दिया। इसके बाद से वरुण लगातार अपने क्षेत्र में किसानों के सम्मेलन कर रहे हैं। वह खुद को किसान नेता के रूप में स्थापित करने का प्रयास भी कर रहे हैं। इसके साथ ही वह युवाओं से भी कनेक्ट हो रहे हैं। अग्निवीर भर्ती का विरोध कर चुके हैं और युवाओं को नौकरी न मिलने पर लगातार केंद्र और राज्य सरकार को घेर रहे हैं।

केंद्रीय मंत्री टेनी के बेटे के खिलाफ ट्वीट से और बिगड़े रिश्ते

२०१६ में मां मेनका गांधी के मंत्री न बनाए जाने और खुद को राष्ट्रीय महासचिव पद से हटाए जाने के बाद वरुण की नाराजगी और बढ़ती चली गई। सार्वजनिक मंच पर वह बीजेपी की नीतियों के खिलाफ बोलने लगे। हर बड़े मसले पर केंद्र या राज्य सरकार के खिलाफ ट्वीट करने लगे। तीन ंषि कानूनों के खिलाफ खुलकर किसानों का समर्थन किया। बेरोजगारी, अग्निवीर समेत कई मुद्दों पर अपनी ही सरकार को घेरने लगे। लखीमपुर खीरी कांड में सबसे पहले जीप से कुचलने वाला वीडियो भी वरुण गांधी ने ही ट्वीट किया। जिससे केंद्रीय गृह राज्य मंत्री के बेटे आशीष मिश्रा के बचाव की सारी दलीलें धरी रह गईं।

मैं वरुण गांधी से प्यार से मिल सकता हूं, उन्हें गले लगा सकता हूं, मगर उस विचारधारा को स्वीकार नहीं कर सकता।" वरुण गांधी को लेकर ये शब्द भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल गांधी ने कहे। राहुल के इन शब्दों ने वरुण के कांग्रेस में जाने की चर्चाओं पर सवाल खड़े कर दिए हैं। राहुल ने वरुण को गले लगाने की बात कहकर पारिवारिक सौम्यता तो दिखाई पर विचारधारा को सामने लाकर पार्टी में जगह देने की बात को नकारते हुए नजर आए। राहुल का बयान आने के बाद बड़ा सवाल यह खड़ा होता है कि वरुण राजनीतिक रूप से क्या फैसला लेंगे? क्या अभी वह २०२४ के चुनाव तक भाजपा में अपनी जिम्मेदारी की प्रतीक्षा करेंगे? कांग्रेस के प्रति नरम रवैया जारी रखेंगे, जिससे परिवार से जुड़ने का रास्ता खुला रहे। या किसी और विकल्प पर जाएंगे?

अरे बाप रे! एक आटो में 18 सवारी...

ARTO भी रह गए दंग, वाहन सीज करने के साथ काटा भारी भरकम चालान

यूपी के बांदा में शुक्रवार को चेकिंग के दौरान एक आटो आता दिखा। एआरटीओ शंकरजी सिंह ने इसे रोकने का प्रयास किया तो आटो चालक ने भागने की कोशिश की। पुलिस वालों ने दौड़ कर पकड़ लिया। जब सवारी उतार गिनना शुरू किया तो चालक सहित आटो में १६ सवारी निकली। आटो की हालत देखकर एआरटीओ दंग रह गए। इसके बाद उन्होंने कार्रवाई की ।

बांदा,संवाददाता। यूपी के बांदा में हैरान करने वाला मामला सामने आया है। अतर्रा मंडी के पास एक आटो को ठसाठस भरा देख जांच को निकले एआरटीओ ने रोका, तो भौचक रह गए। सवारी उतारकर गिनना शुरू किया तो १८ सवारी मिली। चालक ने दो को पीछे लटका रखा था, तो दोनों तरफ पायदान पर सवारी खड़ा कर रखा था। वाहन को सीज कर २८ हजार रुपये का चालान काट हाथों में थमा दिया।

छह वाहनों को किया सीज

एआरटीओ ने अन्य स्थानों पर जांच के दौरान पकड़े गए छह वाहनों को सीज व बिना हेलमेट व सीट बेल्ट के मिलने वाले १२ चालकों को रोक वाहनों का चालान किया गया।

सड़क दुर्घटना में प्रतिमाह 20 से 25 लोगों की मौत

जिले में आए दिन हो रही सड़क दुर्घटना में आकड़ों की बात करें, तो प्रतिमाह करीब २० से २५ लोगों की मौत हो रही है। इस पर अकुंश लगाने के लिए जिलाधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल लगातार अभियान चलाने को निर्देशित भी करती रहती हैं और आरटीओ विभाग भी चालकों को जागरूक करते हुए न मानने वालों पर कार्रवाई करता है। इसके बावजूद चालक सुधरने का नाम नहीं ले रहे हैं।

आटों में चालक सहित सवार थे 19 लोग, ARTO देखकर रह गए दंग

शुक्रवार को अतर्रा मंडी के पास चेकिंग के दौरान आटो यूपी ६६सी ६६६१ आता दिखा। एआरटीओ शंकरजी सिंह ने इसे रोकने का प्रयास किया तो आटो को मोड़ भागने लगा। जिस पर पुलिस वालों ने दौड़ कर पकड़ लिया। जब सवारी उतार गिनना शुरू किया तो चालक सहित आटो में १६ सवारी निकली। एआरटीओ ने बताया कि सवारियों को दूसरे वाहन से उनके गंतव्य को भेजा गया, जबकि आटो को सीज करते हुए चालक का लाइसेंस जब्त कर लिया गया है।

हत्या के पांच दोषियों को उम्रकैद

शादी समारोह में डांस को लेकर हुए विवाद में ले ली थी युवक की जान

ज्ञानपुर (भदोही), संवाददाता। शादी समारोह में बज रहे म्यूजिक सिस्टम पर नाचने के विवाद में हुई हत्या के मामले में अदालत ने सिर्फ दस माह में सुनवाई पूरी करते हुए बुधवार को पांच लोगों को दोषी बताते हुए उम्रकैद और ८५ हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई है। घटना भदोही कोतवाली के रयां गांव की है। अर्थदंड नहीं देने पर भदोही कोतवाली के रयां निवासी सभी दोषियों छोटेलाल, लक्ष्मण वनवासी, रामू, पताली व अनिल उर्फ नागे वनवासी को एक साल का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा।

क्या है पूरा मामला

भदोही कोतवाली के रयां निवासी गीता वनवासी के पड़ोसी संजय वनवासी के बेटे की २६ जून २०२२ को शादी थी। शादी समारोह होने के कारण २५ जून को उसके घर में म्यूजिक सिस्टम पर सब लोग नाच-गा रहे थे। वह भी पति विजय के साथ गई थी। सभी लोग शराब के नशे में थे। इस बीच संजय ने नातिन की तबीयत खराब होने की बात कहकर गान बंद करा दिया। वह अपने पति विजय के साथ घर लौट गई। कुछ देर बाद विजय का आरोपित छोटेलाल वनवासी की बेटी अनिता से विवाद हो गया। आरोपितों ने विजय को लाठी डंडे से जमकर पीटा।

कुएं में मिला था विजय का शव

शोरगुल सुनकर वह ससुर व बेटों संग विजय को बचाने के लिए गई तो आरोपितों ने उन्हें भी दौड़ा लिया। जान बचाने को वे पास की झाड़ी में छिप गए। आरोपित विजय को घसीटते हुए स्कूल के पीछे ले गए। रात का वक्त होने से पता नहीं चला। सुबह विजय का शव फत्तूपुर गांव में कुएं में मिला।

डार्क जोन में पहुंच चुकी बुंदेलखंड की पंचायत को बनाया पानी से भरपूर, ऐसे निकाला समस्या का निदान

उत्तर प्रदेश में बांदा के महुआ ब्लाक की पतौरा पंचायत ने वर्षा जल को सहेजने के लिए कई सफल प्रयास किए हैं। इसके लिए सोकपिट बनाए गए हैं। यह पंचायत विकास कार्यों में भी आगे है। यहा की प्रधान विनीता त्रिपाठी के प्रयासों से महिलाओं के सिर पर घड़ा रखकर पानी ढोने का चलन बंद हुआ है। आज यहां चारों ओर पानी नजर आता है।

संवाददाता, बांदा। मैं महुआ ब्लाक की ग्राम पंचायत पतौरा। एक समय था जब पानी का जलस्तर काफी नीचे था और डार्क जोन में गिनती थी। बुंदेलखंड की जलसंकट की समस्या से अलग नहीं था। आज मेरी कोख के खेतों में चारों तरफ पानी नजर आता है। डार्क जोन से ऊपर आ गया हूं और कुएं ऐसे हैं कि सात से आठ फीट पर पानी में चेहरा देखा जा सकता है। जल शक्ति मंत्रालय की टीम आई, तो मैं इठला गया। जलग्राम की ओर कदम बढ़ने से अब आंखों में एक सपना जगा हैय सबके लिए नजीर बनने का।

2024 में 22 सांसदों के कट सकते हैं टिकट

BJP ने कराया इंटरनल सर्वे, हेमा मालिनी, वरुण और बृजभूषण के टिकट पर लटकी तलवार

लखनऊ। आप में से कोई भी अपना टिकट पक्का न समझें। उम्रदराज सांसदों को रिटायरमेंट के लिए तैयार हो जाना चाहिए। भाजपा एक बड़ी राजनीतिक पार्टी है। ऐसे में सभी को समायोजित करना काफी मुश्किल है। ये बातें पीएम मोदी ने दिल्ली में सोमवार को यूपी के सांसदों से बातचीत के दौरान कही थी। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, २०२४ में यूपी में २२ मौजूदा सांसदों के टिकट कट सकते हैं। इसमें हेमा मालिनी, वरुण गांधी और बृजभूषण जैसे नाम हैं। पीएम ने जो बात कही है वह यूपी में बीजेपी के दो इंटरनल सर्वे की रिपोर्ट के आधार पर कही है। दरअसल, बीजेपी ने यूपी में मिशन-८० का टारगेट रखा है। २०१४ और २०१९ की तरह इस बार भी बीजेपी यूपी के सहारे दिल्ली की कुर्सी पर काबिज होना चाहती है। दरअसल, बीजेपी अपने सांसदों का इंटरनल सर्वे करा रही है। ३ महीने पहले ही इंटरनल सर्वे शुरू किए जा चुके हैं। अब तक दो सर्वे किए जा चुके हैं। इसकी रिपोर्ट ३ बातों के आधार पर बनाई है।

बीजेपी का हर चुनाव में एक ही फार्मूला... जीत

सियासी गलियारों में बीजेपी के लिए कहा जाता है कि चुनाव कोई भी हो। उसका केवल एक ही फार्मूला रहता है। वह है जीत का। इसके लिए बीजेपी किसी का टिकट काटने में गुरेज नहीं करती है। दूसरे दलों से आए लोगों को टिकट देने में भी देरी नहीं करती। पीएम मोदी सांसदों को इसका संकेत दिल्ली में हुई बैठक में दे चुके हैं।

सूत्रों के मुताबिक, पीएम ने कई मौजूदा सक्रिय विधायकों को भी लोकसभा टिकट दिए जाने का संकेत दिया। पीएम ने सांसदों को समझाते हुए यहां तक कहा कि छक। में सहयोगी दलों की वजह से कई सांसदों को टिकट से समझौता करना पड़ सकता है। यही नहीं, मीटिंग में एक सांसद ने रिपोर्ट कार्ड का हवाला दिया तो मोदी ने समझाया कि अच्छा काम करने वाले सांसदों को भी सीट छोड़नी पड़ सकती है।

कुछ मंत्रियों को लड़ा सकती है चुनाव

२०२४ के लोकसभा चुनाव में बीजेपी एक बार फिर २०१४ और २०१९ के पुराने सफल फार्मूले को आजमाने जा रही है। बीजेपी इस बार भी सरकार के कुछ मंत्रियों और विधायकों को चुनाव मैदान में उतारने की तैयारी कर रही है।

2014 में जिन विधायकों को चुनाव लड़ाया वो बने सांसद

२०१४ के चुनाव में बीजेपी ने उस वक्त विधायक रही उमा भारती, केशव प्रसाद मौर्य, सावित्रीबाई फुले, हुकुम सिंह, कुंवर भारतेंदु सिंह, राघव लखन पाल, कलराज मिश्रा, महेश शर्मा और कुंवर सर्वेश कुमार को भी चुनाव मैदान में उतारा था। इनमें से ज्यादातर ने जीत हासिल की थी।

2019 में योगी सरकार के 4 मंत्री बने थे लोकसभा सांसद

२०१९ के लोकसभा चुनाव में भी बीजेपी ने सरकार के चार मंत्रियों समेत कुल ८ विधायकों को चुनाव मैदान में उतारा था। इनमें से ज्यादातर ने जीत हासिल की थी। जिन मंत्रियों को उस वक्त लोकसभा चुनाव लड़ाया गया था। उनमें रीता बहुगुणा जोशी, सत्यदेव पचौरी, एसपी सिंह बघेल और मुकुट बिहारी वर्मा शामिल थे। इनमें मुकुट बिहारी वर्मा को छोड़ बाकी तीनों मंत्री चुनाव जीतने में कामयाब रहे। इसके अलावा, जिन विधायकों को इस लोकसभा चुनाव में उम्मीदवार बनाया गया था उनमें आर के पटेल, राजवीर सिंह दिलेर, प्रदीप कुमार और अक्षयबर लाल गौंड शामिल थे।

2019 में बीजेपी ने 12 से ज्यादा सांसदों के टिकट काटे

चुनाव में टिकट बदलने की बीजेपी में पुरानी परंपरा है। साल २०१९ में जब लोकसभा के चुनाव यूपी में हुए तो करीब १२ सांसदों के टिकट काट दिए थे। वहीं, अगर २०२२ के विधानसभा चुनाव की बात करें तो उस वक्त बीजेपी ने लगभग ८० से ज्यादा विधायकों के टिकट काट दिए थे और कुछ के टिकट बदल दिए थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीसरे टर्म की तैयारी तेज कर दी है।

सोमवार को मोदी ने छक। के ४४ सांसदों की क्लास ली। ये क्लास पार्लियामेंट की एनेक्सी बिल्डिंग में लगी। दो सेशन हुए। मास्टर मोदी ने सांसदों को पुचकारने के साथ सख्त हिदायत भी दी।उत्तर प्रदेश के सांसदों की बैठक में मोदी ने दो टूक कह दिया कि आप में से कोई भी अपना टिकट पक्का न समझें। उम्रदराज सांसदों को रिटायरमेंट के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

इनका टिकट कटने की आशंका

इन दो सांसदों के बदले जा सकते हैं टिकट

उम्र की वजह से कट सकता है टिकट

परफॉर्मेंस के नाम पर कट सकते हैं टिकट

नाम	जिला
देवेंद्र सिंह भोले	अकबरपुर
आर के पटेल	बांदा
केसरी देवी पटेल	फूलपुर
विजय दुबे	कुशीनगर
उपेंद्र रावत	बाराबंकी
मुकेश राजपूत	फर्रुखाबाद
राजवीर दिलेर	हाथरस
बीपी सरोज	मछली शहर
रमेश चंद्र बिंद	भदोही
संगम लाल गुप्ता	प्रतापगढ़
वरुण गांधी	पीलीभीत
बृजभूषण शरण सिंह	कैसरगंज
मेनका गांधी	सुल्तानपुर
जय प्रकाश रावत	हरदोई

सीएम योगी ने शोधार्थियों से किया संवाद

विकासखंडों की प्रगति पुस्तिका का किया विमोचन, बोले- असीमित संभावनाओं वाला प्रदेश

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को सकारात्मक विकासखंडों में कार्यरत शोधकर्ताओं से संवाद किया। इस दौरान उन्होंने विकासखंडों की प्रगति पुस्तिका का विमोचन किया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को सकारात्मक विकासखंडों में कार्यरत शोधकर्ताओं से संवाद किया। इसके साथ ही सीएम योगी ने विकास खंडों की प्रगति पुस्तिका का विमोचन भी किया। इस दौरान वित्त मंत्री सुरेश खन्ना भी मौजूद रहे।

प्रदेश में 100 विकासखंड आएं औसत के बराबर

उत्तर प्रदेश में पिछले साल १०० से ज्यादा विकासखंड राज्य के औसत से भी पीछे थे लेकिन इस साल के आंकड़े को देखे तो १० से भी कम विकासखंड हैं जो औसत से पीछे हैं। मुख्यमंत्री फेलोशिप कार्यक्रम के शोधार्थियों के द्वारा गांव में स्वरोजगार सृजन करने और ग्राम पंचायत स्तर पर बैंकों के कैंप लगाने का काम किया गया।

सीएम योगी ने शोधार्थियों से किया संवाद

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने फेलोशिप कार्यक्रम के तहत १०० छात्र विकासखंडों में तैनात शोधार्थियों से संवाद भी स्थापित किया। खंडों में इस दौरान शोधार्थियों ने अपने अपने विकासखंडों में किए जा रहे कामों से भी सीएम को अवगत कराया।

विकासखंडों की प्रगति पुस्तिका का विमोचन

उत्तर प्रदेश के विकास खंडों की प्रगति पुस्तिका का विमोचन किया। विकास उत्तर प्रदेश के सभी विकास खंडों में किए गए कामों का उल्लेख किया गया है।

राहुल गांधी की सजा पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाई रोक

अजय लल्लू बोले–कानून और संविधान पर भरोसा था
अंशु अवस्थी ने कहा–न्याय की जीत

लखनऊ। सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी की सजा पर रोक लगाने के बाद यूपी कांग्रेस के नेताओं में खुशी की लहर है। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अ ल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य अजय लल्लू ने कहा कि यह संविधान और कानून की जीत है। मुझे पहले से भरोसा था कि न्यायपालिका ही देश के संविधान को बचा सकती हैं। यूपी कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता अंशु अवस्थी ने कहा कि राहुल गांधी की सजा पर रोक न्याय की जीत है। अब लोकतंत्र में रहकर राहुल गांधी एक बार फिर से जनता और आम आदमी की आवाज को बुलंद करते रहेंगे।

पूर्व अध्यक्ष बोले– न्याय व्यवस्था ही संविधान बचा सकती

पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष अजय लल्लू ने कहा न्यायपालिका और देश के सर्वोच्च न्यायालय ने जो राहुल गांधी की सजा पर रोक के आदेश दिया है। उसका पूरा देश और कांग्रेस पार्टी सम्मान करती है। सुप्रीम कोर्ट के द्वारा जिस तरीके से सुनवाई के दौरान सवाल पूछे गए उसका जवाब नहीं दिया जा सका। सरकार अपनी नाकामियों को छुपाने के लिए अपने नेताओं के जरिए कोर्ट को भी राजनीतिक अड्डा बना चुकी है। राहुल गांधी देश की आम जनता की आवाज उठा रहे थे और सरकार की नाकामियों को उजागर कर रहे थे।

राहुल गांधी की सजा पर रोक न्याय की जीत

देश के उच्चतम न्यायालय से पूरे देश को न्याय की उम्मीद थी न्याय हुआ है, क्योंकि राहुल गांधी जिस तरीके से देश के आम आदमी की आवाज को उठा रहे थे और सरकार की नाकामियों को उजागर कर रहे थे। सरकार ने अपनी नाकामी छिपाने के लिए पुरजोर कोशिश की और आम आदमी की आवाज बन चुके है। राहुल गांधी की आवाज दबाने को यह साजिश की गई थी लेकिन राहुल गांधी जनता के मुद्दों से पीछे नहीं हटे आज देश के युवा किसान और आम आदमी का भरोसा है। उच्चतम न्यायालय और राहुल गांधी पर और मजबूत हुआ है। हमें लोकसभा स्पीकर से उम्मीद है कि वह शीघ्र ही उच्चतम न्यायालय के निर्णय का सम्मान करते हुए सदस्यता बहाल संबंधी कार्रवाई करेंगे।

राहुल की सजा पर सुप्रीम कोर्ट ने क्यों लगाई रोक

लोकसभा कब पहुंचेंगे, बंगला कब मिलेगा, सभी जरूरी जवाब

दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली। श्मोदी सरनेमश मानहानि मामले में २ साल की सजा पर रोक लगा दी है। जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा की बेंच ने आदेश में कहा कि ट्रायल कोर्ट के जज को अपने फैसले में अधिकतम सजा सुनाने की वजहें भी बतानी चाहिए थीं।

सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा३

'ट्रायल कोर्ट के फैसले का व्यापक असर हुआ है। न सिर्फ राहुल गांधी के सार्वजनिक जीवन का अधिकार प्रभावित हुआ, बल्कि उन निर्वाचकों का भी जिन्होंने उन हें चुना था। ट्रायल जज ने अधिकतम सजा सुनाने के लिए कोई वजह नहीं दी है। अंतिम निर्णय होने तक सजा के आदेश पर रोक लगाना जरूरी है।'

सुप्रीम कोर्ट से राहुल को राहत मिलने पर अब आगे क्या होगा?

राहुल गांधी की अपील पर दोषसिद्धि पर रोक लगाकर सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें तात्कालिक राहत दी है। इस फैसले के बाद उनकी संसद सदस्यता बहाल हो जाएगी। अगर ये स्थिति २०२४ के चुनाव तक बनी रहती है तो वे चुनाव भी लड़ सकेंगे। लेकिन, अंतिम रूप से क्या होगा ये सुप्रीम कोर्ट के फाइनल फैसले पर निर्भर करेगा।

सुप्रीम कोर्ट तीन बातों पर विचार करेगा

1. क्या राहुल गांधी मानहानि के मामले में दोषी हैं?

२. अगर दोषी हैं तो कितनी सजा होनी चाहिए?

३. वो निर्दोष हैं और उन्हें बरी किया जा सकता है। अगर राहुल मानहानि के मामले में दोषी पाए जाते हैं तो स्थितियां बनेंगी। या तो दो साल की पूरी सजा मिलेगी या दो साल से कम। दो साल की सजा होने पर उनकी संसद सदस्यता खत्म हो जाएगी और ८ साल तक चुनाव नहीं लड़ पाएंगे। २ साल से कम सजा होने पर जेल जाना पड़ेगा, लेकिन सदस्यता बहाल रहेगी और चुनाव लड़ सकेंगे। अगर निर्दोष पाए गए तो उन पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

राहुल की संसद सदस्यता कब तक और कैसे बहाल होगी?

कांग्रेस सांसद अधीर रंजन चौधरी ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला से मुलाकात कर जल्द से जल्द उनके संसद सदस्यता को बहाल करने की मांग की है। लोकसभा स्पीकर ने कोर्ट के आदेश की क पी मिलने के बाद इस पर फैसला लेने की बात कही है। नियम के मुताबिक किसी सांसद को २ साल से ज्यादा की सजा सुनाए जाने पर संसद सदस्यता अ टोमेटिकली खत्म हो जाती है। ऐसे में अब राहुल के दोषसिद्धि पर स्टे लगाए जाने के बाद अ टोमेटिकली उनकी संसद सदस्यता बहाल हो जाएगी। हालांकि, उनकी सदस्यता को बहाल करने की जानकारी लोकसभा सचिवालय अधिसूचना जारी कर देती है। कई बार इसमें महीनों की भी देरी होती है। ऐसे में राहुल मानसून सत्र में तभी हिस्सा ले पाएंगे जब लोकसभा सचिवालय तुरंत अधिसूचना जारी करता है। ये इस बात पर निर्भर करता है कि राहुल कितनी जल्दी लोकसभा सचिवालय में संसद सदस्यता बहाल करने की अपील करते हैं। और लोकसभा सचिवालय उनकी अपील पर कितनी जल्द फैसला लेता है। अगर किसी वजह से लोकसभा सचिवालय में उनकी अपील पर सुनवाई में देरी होती है तो राहुल सदस्यता बहाल कराने के लिए सुप्रीम कोर्ट में अपील कर सकते हैं।

राहुल बोले माफी नहीं मांगूगा, पूर्णेश ने कहा आदतन अपराधी

कोर्ट में राहुल गांधी का हलफनामा	कोर्ट में पुर्णेश मोदी का हलफनामा
• न्यायिक प्रक्रिया का दुरुपयोग कर बिना किसी गलती के माफी मांगने को मजबूर किया जा रहा है। इस न्यायालय द्वारा इसे स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।	• ट्रायल कोर्ट और बाकी कोर्ट के सामने राहुल गांधी ने मोदी समुदाय को बदनाम करने वाली अपनी टिप्पणी पर माफी मांगने के बजाय अहंकार दिखाया है। इसलिए उन्हें राहत नहीं देनी चाहिए।
• अगर माफी मांगनी होती और समझौता करना होता तो बहुत पहले ही ऐसा कर चुका होता।	• राहुल ने अपने लापरवाह और दुर्भावनापूर्ण शब्दों से पूरी तरह से निर्दोष वर्ग के लोगों को बदनाम किया है।
• यह मामला असाधारण है, क्योंकि अपराध मामूली है और एक सांसद के तौर पर अयोग्य ठहराए जाने से अपूरणीय क्षति हुई है।	• राहुल गांधी आदतन अपराधी हैं, कई मौकों पर इस तरह के बयान दिए हैं।
• दोषसिद्धि पर रोक लगाई जाए, जिससे वह लोकसभा की चल रही बैठकों और उसके बाद के सत्रों में हिस्सा ले सकें।	• राहुल की दोषसिद्धि और सजा को रद्द नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि उन्होंने एक निर्वाचित प्रधानमंत्री और मोदी उपनाम वाले सभी व्यक्तियों को बदनाम किया है।

राहुल पर मानहानि केस की टाइमलाइन

- **2019** 11 अप्रैल — बेंगलुरु की रैली में कहा- सभी चोरों का नाम मोदी क्यों?
- **2019** 13 अप्रैल — बीजेपी विधायक पूर्णेश मोदी ने शिकायत दर्ज करवाई।
- **2019** 6 मई — मामला सूरत के सेशन कोर्ट में पहुंचा।

कब-कब कोर्ट में पेश हुए राहुल गांधी

- 16 जुलाई 2019
- 10 दिसंबर 2019
- 29 अक्टूबर 2021
- **2023** 23 मार्च — सेशन कोर्ट ने राहुल को दो साल की सजा सुनाई।
- **2023** 7 जुलाई — गुजरात हाईकोर्ट में राहुल की याचिका खारिज और 2 साल की सजा बरकरार।
- **2023** 4 अगस्त — सुप्रीम कोर्ट ने राहुल के दोषसिद्धि पर रोक लगा दी।

इस तरह के मामलों में पहले क्या हुआ?

जनवरी २०२३ में लक्षद्वीप के सांसद मोहम्मद फैजल को कवारत्ती में एक सत्र अदालत से हत्या के प्रयास के मामले में दोषी ठहराया गया। उन्हें १० साल की जेल की सजा की सजा सुनाई गई। इसके बाद लोकसभा सचिवालय ने १३ जनवरी २०२३ को एक अधिसूचना जारी कर उनकी सदस्यता को अयोग्य ठहरा दिया। २५ जनवरी को केरल हाई कोर्ट ने उनकी सजा पर रोक लगा दी थी। इसके बाद फैजल ने हाईकोर्ट के आदेश को आधार बनाकर लोकसभा सचिवालय से अपनी सदस्यता दोबारा से बहाल करने की मांग की। इस बीच चुनाव आयोग ने उनके लोकसभा सीट पर उपचुनाव का भी ऐलान कर दिया था। फैजल ने चुनाव आयोग के इस फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की। सुप्रीम कोर्ट में २६ मार्च को इस मामले में सुनवाई होनी थी, लेकिन इससे पहले ही लोकसभा सचिवालय ने उनकी संसद सदस्यता बहाल कर दी। सदस्यता जाने के बाद राहुल से बंगला खाली करा लिया गया था। अब सदस्यता बहाल होने पर बंगला कब मिलेगा? सांसदों को बंगले का आवंटन केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के निदेशालय के जरिए किया जाता है। लोकसभा और राज्यसभा दोनों सदनों के सांसदों को बंगला आवंटन और रद्द करने के लिए सांसदों वाली एक सदन समिति है। ये समिति ही केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय से बंगला आवंटन का सिफारिश करती है। सदस्यता बहाल होने के बाद इस समिति की सिफारिश के आधार पर राहुल को बंगला आवंटित हो गया। हालांकि, जरूरी नहीं कि उन्हें १२ तुलगक रोड वाला बंगला ही आवंटित हो, जहां वो पहले रह रहे थे।

राहुल गांधी ने अपने भाषण में जिनका नाम लिया, किसी ने मुकदमा नहीं किया। दिलचस प है कि १३ करोड़ के इस श्छोटेश समुदाय से मुकदमा केवल ठश्रच के पदाधिकारियों ने किया। बड़ी अजीब बात है!

कोई भी आरोप किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने वाला नहीं है, जब तक कि यह किसी व्यक्ति के नैतिक या बौद्धिक चरित्र को कम नहीं करता है।

यह गैर संज्ञेय अपराध है। समाज के खिलाफ नहीं है... न हत या, न रेप, न किडनैपिंग... २ साल की अधिकतम सजा... इसमें नैतिक अधमता का अपराध कहां से आ गया?

राहुल गांधी को ८ साल के लिए चुप करा दिया जाएगा? लोकतंत्र में मतभेद होते हैं। हिंदी में हम शालीन भाषा कहते हैं, मुझे नहीं लगता कि ऐसी मंशा रही होगी...।

उसे न यूजपेपर कटिंग का व ट्सऐप मिला। वह यह नहीं बताता कि उसे यह किसने दिया। एविडेंस एक ट के हिसाब से, असल घटना साबित नहीं हुई।

सुप्रीम कोर्ट में पूर्णेश मोदी की तरफ से सीनियर एडवोकेट महेश जेठमलानी की दलीलें...

राहुल के भाषण का प्रमाणिक वर्जन है। चुनाव आयोग के निर्देश पर जिसने रिक डिंग की, वह गवाह है। कैमरा थामने वाला फोटोग्राफर भी गवाह है। राहुल ने कहा था- अच छा एक छोटा सा सवाल, इन सब चोरों का नाम, मोदी, मोदी, मोदी कैसे है... ललित मोदी, नीरव मोदी... और थोड़ा ढूंढेंगे तो और सारे मोदी निकल आएंगे।श उनकी मंशा मोदी सरनेम वाले हर व्यक्ति का अपमान करना था, क्योंकि प्रधानमंत्री का भी वही सरनेम है। दोषसिद्धि पर अयोग्यता अ टोमेटिक और तत्काल है। दोषसिद्धि पर रोक लगाने के आवेदनों में, एक बहुत स्पष्ट बिंदु होना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने राफेल मामले में भी उन हें (राहुल) नसीहत दी थी। जनता को ऐसे किसी व्यक्ति को चुनने का अधिकार नहीं जो जल्दी में वाक्य बनाता हो, जिसने कानून तोड़ा हो।

सुप्रीम कोर्ट में राहुल गांधी ने दो बातों को लेकर याचिका दायर की थी

१. सेशन कोर्ट के फैसले पर गुजरात हाईकोर्ट ने सुनवाई करने से इनकार कर दिया है। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट राहुल गांधी से जुड़े इस मामले में एक बार फिर से सुनवाई करे।

२. जब तक सुप्रीम कोर्ट में इस मामले पर सुनवाई होती है, तब तक के लिए दोषसिद्धि पर रोक लगा दिया जाए, ताकि उनकी संसद सदस्यता बहाल हो सके।

राहुल गांधी के खिलाफ मानहानि के दूसरे मुकदमे भी पेंडिंग हैं, उनका क्या स्टेटस है?

२०१४ में राहुल गांधी ने संघ पर महात्मा गांधी की हत्या का आरोप लगाया था। एक संघ कार्यकर्ता ने राहुल पर प्च्ब की धारा ४६६ और ५०० के तहत मामला दर्ज कराया था। ये केस महाराष्ट्र के भिवंडी कोर्ट में चल रहा है।

२०१६ में राहुल गांधी के खिलाफ असम के गुवाहाटी में धारा ४६६ और ५०० के तहत मानहानि का केस दर्ज किया गया था। शिकायतकर्ता के मुताबिक, राहुल गांधी ने कहा था कि १६वीं सदी के असम के वैष्णव मठ बरपेटा सतरा में संघ सदस्यों ने उन्हें प्रवेश नहीं करने दिया। इससे संघ की छवि को नुकसान पहुंचा है। ये मामला भी अभी कोर्ट में पेंडिंग है।

२०१८ में राहुल गांधी के खिलाफ झारखंड की राजधानी रांची में एक और केस दर्ज किया गया। ये केस रांची की सब-डिविजनल ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट की कोर्ट में चल रहा है। राहुल के खिलाफ प्च्ब की धारा ४६६ और ५०० के तहत २० करोड़ रुपए मानहानि का केस दर्ज है। इसमें राहुल के उस बयान पर आपत्ति जताई गई है, जिसमें उन्होंने मोदी चोर है कहा था।

२०१८ में ही राहुल गांधी पर महाराष्ट्र में एक और मानहानि का केस दर्ज हुआ। ये मामला मझगांव स्थित शिवड़ी कोर्ट में चल रहा है। प्च्ब की धारा ४६६ और ५०० के तहत मानहानि का केस दर्ज है। केस संघ के कार्यकर्ता ने दायर किया था। राहुल पर आरोप है कि उन्होंने गौरी लंकेश की हत्या को ठश्रच और संघ की विचारधारा से जोड़ा।

पूरे भारत में स्वतंत्रता का दमन किया गया', अनुच्छेद 370 रद्द

नई दिल्ली। सरकार ने कहा था कि अनुच्छेद ३७० के बाद जम्मू-कश्मीर विकास की राह पर है। इसी पर पलटवार करते हुए चिदंबरम ने कहा कि अगर जम्मू-कश्मीर में इतनी शांति है, तो सरकार ने महबूबा मुफ्ती को घर में नजरबंद क्यों कर दिया है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी. चिदंबरम ने रविवार को सरकार पर पूरे भारत में स्वतंत्रता का दमन करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सरकार का कहना है कि अनुच्छेद ३७० को निरस्त करने से जम्मू-कश्मीर में शांति आई है। जबकि पूरे भारत में स्वतंत्रता का दमन किया गया है। इतना ही नहीं, सबसे गंभीर दमन केंद्र शासित प्रदेश में हुआ है। गौरतलब है, अनुच्छेद ३७० के निरस्त होने की वर्षगांठ के मौके पर सरकार ने शनिवार को इस बात पर प्रकाश डाला था कि इस ऐतिहासिक फैसले से जम्मू-कश्मीर में शांति और विकास की शुरुआत हुई है। उपराज्यपाल (एलजी) मनोज सिन्हा ने श्रीनगर में कहा था कि अनुच्छेद हटने के बाद सबसे बड़ा बदलाव यह है कि जम्मू-कश्मीर के आम लोग अपनी मर्जी के मुताबिक जीवन जी रहे हैं। इसी पर पलटवार करते हुए चिदंबरम ने कहा कि सरकार और जम्मू-कश्मीर के एलजी अनुच्छेद ३७ के निरस्त होने के बाद राज्य (अब केंद्र शासित प्रदेश) में आई शांति का जश्न मना रहे हैं। उन्होंने पूछा कि अगर जम्मू-कश्मीर में इतनी शांति है, तो सरकार ने महबूबा मुफ्ती को घर में नजरबंद क्यों कर दिया है? साथ ही पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) और नेशनल क न्फ्रेंस के कार्यालयों को सील क्यों कर दिया गया है? उन्होंने आरोप लगाया कि पूरे भारत में आजादी का दमन किया जा रहा है, लेकिन जम्मू-कश्मीर में सबसे गंभीर दमन हुआ है।

शादी के बाद ली गई मीना कुमारी और कमाल अमरोही की तस्वीर

अली बख्श इंतजार में थे कि अब हास्पिटल के आपरेशन रूम से नर्स भागते हुए आएगी और उन्हें बेटा होने के खुशखबरी देगी। लेकिन हुआ इसका उल्टा। नर्स आई जरूर, लेकिन बेटे नहीं बेटी की खबर लेकर। ये अली बख्श के लिए खुशखबरी नहीं मनहूस खबर थी। उन्होंने सीधे चंद घंटों की बच्ची को गोद में लिया और अनाथआश्रम छोड़ आए। वो नन्ही सी बच्ची थी महजबीं उर्फ मीना कुमारी और ये था उनकी जिंदगी का पहला दिन। वही मीना कुमारी जिसे ट्रेजेडी क्वीन नाम से जाना जाता है। न बचपन में पिता का प्यार मिला, न कोई दुलार। कम उम्र में गरीबी में उन्होंने बचपन छोड़कर कामकाज में ध्यान लगाया।

हुनर की बदौलत ये स्टार बनीं। रानियों की तरह बिस्तर में रोज गुलाब की पंखुड़ियां बिछाकर सोती थीं और इंपाला कार से घूमा करती थीं, जो उस समय किसी के पास नहीं थी। लेकिन इसके बावजूद मीना कुमारी की ३८ साल की जिंदगी दर्दनाक रही। इतनी दर्दनाक की मीना कुमारी को रोने के लिए कभी ग्लीसरीन की जरुरत नहीं पड़ी।बुरी नजर रखने वाले डायरेक्टर ने बदला लेने के लिए ३१ थप्पड़ पड़वाए, पति ने जुल्म किए और शराब ने जान ले ली। जिंदगी इतनी मुश्किल रही कि मौत पर नरगिस ने मुबारकबाद देकर कहा था- मौत मुबारक हो, अब इस दुनिया में कभी मत आना।

ट्रेजेडी क्वीन
मीना कुमारी
की 90वीं
बर्थ एनिवर्सरी

मीना कुमारी को पिता ने छोड़ा अनाथआश्रम

बदले के लिए डायरेक्टर ने पड़वाए 31 थप्पड़
पति ने पीटा तो नरगिस ने सुनी चीखें

तीसरी पत्नी संग तलाक पर राहुल महाजन ने तोड़ी चुप्पी

बिग बास २ के कंटेस्टेंट और फेमस टीवी पर्सनालिटी राहुल महाजन और उनकी तीसरी पत्नी माडल नताल्या इलीना की शादी को चार साल हो बीत चुके हैं। इस बीच खबरें हैं कि उन्होंने हाल ही में तलाक के लिए कोर्ट में अर्जी दी है और जल्द ही दोनों अलग होने जा रहे हैं। अब हाल ही में इस मामले पर राहुल से चुप्पी तोड़ी है। हालांकि उन्होंने ने न तो तलाक की पुष्टि की है और न ही खबरों से इनकार किया है।

न हां कहा.. न इनकार किया, बोले– लाइफ को प्राइवेट रखना चाहता हूं

लाइफ को प्राइवेट रखना चाहता हूं– राहुल

दरअसल, २०१८ में शादी के बाद से ही राहुल और उनकी पत्नी नताल्या के बीच रिश्तों में विवाद रहा था। रिपोर्ट्स के मुताबिक पिछले साल ही दोनों अलग हो गए थे, वहीं अब कपल ने तलाक की अर्जी दे दी है।

हिंदुस्तान टाइम्स से बातचीत में राहुल ने कहा- 'मैं अपनी लाइफ को प्राइवेट रखना चाहता हूं। ऐसे में मैं इस बारे में मीडिया से कुछ भी नहीं कहना चाहता। मेरी पर्सनल लाइफ में इस वक्त क्या चल रहा है, इसे लेकर मैं अपने दोस्तों से भी बात नहीं करता। अपनी बात करूं तो मैं इन दिनों अच्छा हूं।'

आधी फीस मिली तो आधा सिर मुंडवाकर पहुंचे, देव आनंद को गाली देकर भाग गए थे किशोर कुमार

दरवाजे पर लिखा था किशोर से सावधान

आज गायक-एक्टर किशोर कुमार की १०६वीं बर्थ एनिवर्सरी है। वो जितने गजब के गायक थे, उतने ही अफलातून इंसान भी थे। फिल्मी दुनिया की वो इकलौती शख्सियत थे, जिनकी असल जिंदगी के किस्से भी उनकी फिल्मों जितने ही दिलचस्प और हंसाने वाले हैं। किशोर दा को गुजरे तीन दशक से ज्यादा हो गए, लेकिन उनके गाए गाने और अजीबोगरीब हरकतों के किस्से दोनों ही सदाबहार हैं।

चोट लगने पर चिल्ला-चिल्लाकर रोते थे, सुरीली हो गई आवाज

किशोर कुमार का जन्म ४ अगस्त को खंडवा, मध्य प्रदेश में हुआ था, असली नाम था आभास कुमार गांगुली। उनके पिता कुंजालाल गांगुली वकील थे। वहीं नामी बंगाली परिवार से ताल्लुक रखने वालीं उनकी मां गौरी देवी हाउसवाइफ थीं। ४ भाई-बहन अशोक, सीता देवी, अनूप में किशोर कुमार सबसे छोटे थे। किशोर कुमार के बड़े भाई अशोक कुमार ने एक इंटरव्यू में बताया था कि किशोर दा बचपन से सुरीले नहीं थे। उनकी आवाज बैठी हुई थी। जब कभी गुनगुनाते थे तो बेसुरे सुनाई पड़ते थे।

एक दिन बचपन में मां किचन में सब्जियां काट रही थीं। नन्हे से किशोर दौड़ते हुए मां के पास जा ही रहे थे कि वहां रखा धारदार हंसिया उनके पैर में लग गया। पैर कट गया और तेजी से खून बहने लगा। कम उम्र के किशोर दर्द नहीं सह पाए और जोर-जोर से रोने लगे। ऐसे ही जब तक चोट में आराम नहीं मिला, तब तक किशोर दा रोज रोते रहे। घंटों रोने से उनके वोकल क र्ड्स पर इतना असर पड़ा कि वो सुरीले हो गए। किशोर दा भी उस हादसे को ही अपनी आवाज का श्रेय देते हैं।

किशोर कुमार

किस्सा - 2

जब लता मंगेशकर की गैरमौजूदगी में खुद लड़की बनकर गाया

- फिल्म हाफ टिकट का गाना आके सीधी लगी दिल पे तीखी नजरिया किशोर कुमार को लता मंगेशकर के साथ गाना था।
- लता मंगेशकर किसी काम के सिलसिले में शहर से बाहर गई हुई थीं।
- सलील चौधरी जल्द-से-जल्द रिकॉर्डिंग करना चाहते थे, ऐसे में उन्होंने किशोर कुमार के हिस्से की रिकॉर्डिंग करने का फैसला किया।
- लता मंगेशकर के हिस्से की जगह किशोर कुमार ने खुद आवाज बदलकर गाना गा दिया।

वही गाना फिल्म हाफ टिकट में रखा गया, जिसे प्राण और लड़की बने किशोर कुमार पर ही फिल्माया गया था।

गाना इतना बेहतरीन रिकॉर्ड हुआ कि फिर लता मंगेशकर को गाने की जरुरत ही नहीं पड़ी।

किशोर कुमार

किस्सा - 1

कॉलेज की उधारी पर बना गाना- 5 रुपैया 12 आना...

- किशोर कुमार इंदौर के क्रिश्चियन कॉलेज में पढ़ाई कर रहे थे। बॉम्बे आने के लिए उन्होंने पढ़ाई अधूरी छोड़ दी।
- जब कॉलेज छूटा तो वो अपनी कॉलेज कैंटीन के 5 रुपए 12 आना उधार चुका नहीं सके।
- सालों बाद जब उन्होंने चलती का नाम गाड़ी (1958) के लिए गाना लिखा, तो उसी उधार का जिक्र किया।

गाने के बोल थे- 5 रुपैया 12 आना.....।

गाने को किशोर कुमार और लता मंगेशकर ने आवाज दी थी।

दीपिका पर चढ़ा राकी और रानी का बुखार

कार के अंदर बैठकर झुमका गिरा रे पर किया डांस, आलिया भट्ट भी मुरीद हुईं

28 जुलाई को रिलीज हुई है फिल्म

करण जौहर के निर्देशन में बनी यह फिल्म राकी और रानी की प्रेम 28 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। फिल्म में रणवीर, आलिया के अलावा शबाना आजमी, जया बच्चन और धर्मेंद्र भी लीड रोल में हैं। बाक्स आफिस पर फिल्म ताबड़तोड़ कमाई कर रही है। फिल्म की कहानी राकी रंधावा यानी रणवीर सिंह और रानी चटर्जी यानी आलिया भट्ट की लव स्टोरी पर आधारित है। राकी और रानी की प्रेम कहानी ने रिलीज के तीसरे दिन दिन यानी रविवार को 19.18 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया है। तीन दिनों में फिल्म का टोटल कलेक्शन 46.33 करोड़ रुपए हो गया है।

रणवीर सिंह, आलिया भट्ट की हालिया रिलीज फिल्म राकी और रानी इन दिनों सुर्खियों में बनी हुई है। इसी बीच रणवीर ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर अपनी रियल लाइफ रानी यानी दीपिका पादुकोण के साथ एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें एक्ट्रेस फिल्म के गाने व्हाट झुमका के स्टेप्स करते हुए नजर आईं।

गाड़ी के अंदर नजर आए दोनों

वीडियो में रणवीर और दीपिका कार के अंदर नजर आ रहे हैं। इस दौरान दीपिका, रणवीर की फिल्म श्राकी और रानी के गाने झुमका का हुक-स्टेप कर रही हैं।

इस दौरान एक्ट्रेस ने रणवीर के किरदार राकी रंधावा का डायलाग बोलने की भी कोशिश करती हैं और वीडियो के लास्ट में कहती हैं, कोई भी आपके जैसा नहीं कर सकता। रणवीर ने इस वीडियो को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, उन्हें ये बहुत पसंद आया /दीपिकापादुकोण।

आलिया भट्ट ने किया रिएक्ट

इस वीडियो को आलिया भट्ट ने अपने इंस्टा की स्टोरी पर शेयर किया है।

एक्ट्रेस ने वीडियो को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, आउटस्टैंडिंग। सोशल मीडिया पर फैंस भी दीपिका के डांस मूव्स की तारीफ कर रहे हैं।

लखनऊ का साथ छोड़ने के बाद अब रायल चैलेंजर्स बैंगलोर का हेड कोच बना यह दिग्गज, बांगर-हेसन बर्खास्त

स्पोर्ट्स डेस्क। आरसीबी फ्रेंचाइजी ने हेसन और बांगर को बर्खास्त कर दिया है। जिम्बाब्वे के पूर्व खिलाड़ी और पिछले सीजन लखनऊ सुपर जाएंट्स के हेड कोच रहे एंडी फ्लावर को टीम ने नया हेड कोच नियुक्त किया है। रायल चैलेंजर्स बैंगलोर ने अपने पहले आईपीएल खिताब के लिए तैयारी शुरू कर दी है। टीम पिछले १६ सीजन में एक बार भी ट्राफी नहीं जीत पाई है। पिछले सीजन तो टीम प्लेआफ के लिए भी नहीं क्वालिफाई कर पाई थी। इसका ठीकरा हेड कोच संजय बांगर और टीम डायरेक्टर माइक हेसन पर फूटा है। आरसीबी फ्रेंचाइजी ने हेसन और बांगर को बर्खास्त कर दिया है। जिम्बाब्वे के पूर्व खिलाड़ी और पिछले सीजन लखनऊ सुपर जाएंट्स के हेड कोच रहे एंडी फ्लावर को टीम ने नया हेड कोच नियुक्त किया है।

एंडी के लिए आरसीबी ने किया पोस्ट

एंडी फ्लावर ने हाल ही में लखनऊ सुपर जाएंट्स का साथ छोड़ा था। उनकी जगह जस्टिन लैंगर लखनऊ के हेड कोच बने थे। ऐसे में अब एंडी को आरसीबी का हेड कोच बनाया गया है। एंडी के स्वागत में आरसीबी ने पोस्ट करते हुए लिखा- हम आईसीसी हाल आफ फेमर और इंग्लैंड को टी२० वर्ल्ड कप जिताने वाले कोच एंडी फ्लावर का आरसीबी की पुरुष टीम के हेड कोच के रूप में स्वागत करते हैं। आईपीएल और दुनिया भर की कई टी२० टीमों को कोचिंग देने और अपनी टीमों को पीएसएल, आईएलटी२०, द हंड्रेड और अबू धाबी टी१० में खिताब दिलाने का एंडी का अनुभव आरीसीब को खिताब दिलाने में मदद कर सकता है। उनकी जीतने की मानसिकता से आरसीबी को आगे बढ़ने में मदद मिलेगी।

दो साल लखनऊ के कोच रहे एंडी फ्लावर

लखनऊ की फ्रेंचाइजी २०२२ में बनी थी। तब से एंडी फ्लावर ही इस टीम के हेड कोच थे। उनकी देखरेख में टीम लगातार दो साल प्लेआफ के लिए क्वालिफाई करने में कामयाब रही थी। हालांकि, आईपीएल २०२२ में एलिमिनेटर में लखनऊ सुपर जाएंट्स को रायल चैलेंजर्स बैंगलोर ने १४ रन से हरा दिया था। वहीं, आईपीएल २०२३ में एलिमिनेटर में मुंबई इंडियंस ने लखनऊ को ८१ रन से करारी शिकस्त दी थी।

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः— 273003
Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

विराट कोहली वेस्टइंडीज से स्पेशल चार्टर फ्लाइट से भारत लौटे

स्पोर्ट्स डेस्क। पूर्व भारतीय कप्तान विराट कोहली का वेस्टइंडीज दौरा खत्म हो गया। कोहली गुरुवार को वेस्टइंडीज से स्पेशल चार्टर प्लेन से भारत वापस लौट आए हैं। कोहली ने निजी जेट की फोटो इंस्टाग्राम पर शेयर की है। उन्होंने अपनी फ्लाइट की व्यवस्था करने के लिए निजी जेट सर्विसेज को भी धन्यवाद दिया है। भारत और वेस्टइंडीज के बीच टी-२० सीरीज जारी है, लेकिन कोहली सहित अन्य सीनियर खिलाड़ी टीम का हिस्सा नहीं हैं। कोहली को वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे और तीसरे वनडे में आराम दिया गया था। वहीं पहले वनडे में टीम मैनेजमेंट ने बैटिंग अ र्डर में एक्सपेरिमेंट किया था, इसलिए उन्हें बल्लेबाजी का मौका नहीं मिला था।

कोहली-रोहित को आराम देने के फैसले की हुई थी आलोचना

आखिरी दो वनडे मैचों में कोहली और कप्तान रोहित शर्मा को आराम देने के फैसले की काफी आलोचना भी हुई थी। पूर्व खिलाड़ियों का मानना था कि वनडे वर्ल्ड कप नजदीक है ऐसे में एक्सपेरिमेंट सही नहीं है। आखिरी दो वनडे में टीम की कप्तानी कर रहे हार्दिक पंड्या ने कहा था कि वर्ल्ड कप से पहले भारत को युवाओं को मौका देने के लिए रोहित और कोहली को आराम देने की जरूरत है।

भारत ने खेला 200वां टी-20, पाकिस्तान के बाद दूसरा देश-तिलक डेब्यू मैच में सबसे ज्यादा सिक्स मारने वाले भारतीयों की सूची में नंबर-2 पर

त्रिनिनाद। भारत ने अपना २००वां टी-२० मुकाबला खेला। टीम इंडिया २०० या इससे ज्यादा टी-२० मैच खेलने वाली दुनिया की दूसरी टीम बनी। भारत से ज्यादा पाकिस्तान २२३ टी-२० खेल चुका है। इस लो-स्कोरिंग मैच को वेस्टइंडीज ने ४ रन से जीता। वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-२० सीरीज के पहले मुकाबले के बाद कई रोचक फैक्ट सामने आए। जैसे- हार्दिक पंड्या की कप्तानी में टीम इंडिया पहली बार १५० रन का टारगेट चेज करने में नाकाम रही है। मुकेश कुमार एक दौरे पर तीनों फ मेंट में डेब्यू करने वाले दूसरे भारतीय गेंदबाज बने। तिलक वर्मा ने इंटरनेशनल करियर की शुरुआत सिक्स जमाकर की। आगे खबर में पढ़िए कुछ ऐसे ही रोचक फैक्ट...

200 मैचों के बाद भारत का विनिंग परसेंटेज सबसे ज्यादा

२०० मैचों के बाद भारतीय टीम का विनिंग परसेंटेज सबसे ज्यादा है। भारतीय टीम ने ६३.५ : मैच जीते हैं, जबकि २२३ मैच खेल चुकी पाकिस्तान ६०.०८: मैच ही जीत सकी है। भारत ने २०० में से १२७ और पाकिस्तान ने २२३ में से १३४ मैच जीते हैं।

सबसे ज्यादा टी-20 मैच खेलने वाले देश

देश	मैच	जीते	हारे	टाई	नो रिजल्ट
पाकिस्तान	223	134	80	3	6
भारत	200	127	64	4	5
न्यूजीलैंड	193	98	80	10	5
वेस्टइंडीज	180	74	93	3	10
श्रीलंका	179	79	94	4	2

चौथी बार 150 रन चेज नहीं कर सकी टीम इंडिया

टी-२० क्रिकेट के इतिहास में भारतीय टीम चौथी बार १५० रन का टारगेट चेज करने में नाकाम रही है। इससे पहले टीम २०१६ में न्यूजीलैंड, २०१५ में जिम्बाब्वे और २००६ में साउथ अफ्रीका के खिलाफ १५० का टारगेट चेज करने में नाकाम रही थी।

द्रविड़ और मुरली विजय की बराबरी पर आए तिलक वर्मा

युवा बैटर तिलक वर्मा डेब्यू मैच में सबसे ज्यादा सिक्स जमाने वाले बैटर्स की सूची में दूसरा स्थान हासिल कर लिया है। वर्मा ने डेब्यू मैच में ३ सिक्स जमाए हैं। उन्होंने राहुल द्रविड़ और मुरली विजय की बराबरी कर ली है। डेब्यू मैच में तिलक से ज्यादा छक्के ईशान किशन ने जमाए थे।

डेब्यू मैच में 175 का स्ट्राइक रेट

तिलक वर्मा ने विंडीज के खिलाफ १७७.२७ के स्ट्राइक रेट से बैटिंग की है। वे डेब्यू मैच में १७५ के स्ट्राइक रेट से रन बनाने वाले तीसरे भारतीय बैटर्स बने हैं।

सबसे ज्यादा 150 चेज करने में असफल रहे भारतीय कप्तानों में पंड्या

पंड्या का नाम सबसे ज्यादा बार १५० चेज करने में असफल भारतीय कप्तानों की सूची में जुड़ गया है। उनकी कप्तानी में टीम पहली बार १५० का टारगेट चेज करने में नाकाम रही है। उनके अलावा, अंजिक्य रहाने की कप्तानी में एक और धोनी की कप्तानी में दो बार ऐसा हुआ है।

राष्ट्रगान के दौरान भावुक हुए पंड्या

तिलक ने सिक्स जमाकर शुरू किया इंटरनेशनल करियर, चहल से छूटा पश्चवेल का कैच

त्रिनिदाद। भारतीय टीम वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-२० सीरीज का पहला मुकाबला ४ रन से गंवा बैठी। आखिरी ओवर तक गए इस मुकाबले के दौरान कई इमोशनल, रोचक और फनी मोमेंट्स देखने को मिले। जैसे- भारतीय कप्तान हार्दिक पंड्या इस मुकाबले से पहले राष्ट्रीय गान जन...गण...मन के दौरान भावुक हो गए और रोने लगे, जबकि डेब्यू मैच में तिलक वर्मा ने सिक्स से अपना खाता खोला। साथ ही १०वें नंबर पर बैटिंग करने उतरे युजवेंद्र चहल को कप्तान पंड्या ने बिना खेले ही मैदान से बाहर बुलाया, क्योंकि हार्दिक मुकेश कुमार को ऊपर भेजना चाहते थे, हालांकि बाद में अंपायर के कहने पर चहल को ही बैटिंग करनी पड़ी।

1. राष्ट्रगान के दौरान भावुक हुए भारतीय कप्तान

टास के बाद राष्ट्रगान के दौरान भारतीय कप्तान हार्दिक पंड्या भावुक हो गए। नेशनल एंथम के बाद वे अपने आंसू पोंछते दिखे।

2. डेब्यूटेंट तिलक ने पकड़ा शानदार कैच

डेब्यू मैच खेल रहे तिलक वर्मा ने कुलदीप यादव की बाल पर जानसन चार्ल्स का शानदार कैच पकड़ा। चार्ल्स ने ८वें ओवर की तीसरी बाल पर कुलदीप यादव की गेंद पर शाट मिस किया और बाल बल्ले का बाहरी किनारा लेकर हवा में चली गई। डीप मिडविकेट पर तिलक तैनात थे। उन्होंने दौड़ लगाते हुए कैच पकड़ लिया।

३. चहल से छूटा पावेल का कैच

विंडीज पारी के १५वें ओवर में युजवेंद्र चहल ने वेस्टइंडीज के बल्लेबाज रोवमन पावेल का कैच ड्राप कर दिया। हार्दिक पंड्या की ५वीं बाल पर पावेल ने आफ की दिशा में खेला और बाल कवर पर खड़े चहल के पास गई, लेकिन वो इसे कैच नहीं कर सके।

४. डेब्यू मैच में तिलक ने सिक्स के साथ खाता खोला

भारत के युवा बल्लेबाज तिलक वर्मा ने अपना डेब्यू धमाकेदार अंदाज में किया। वर्मा ने पहले टी-२० मैच में लगातार दो छक्के लगाकर अपने इंटरनेशनल करियर का आगाज किया। ईशान के आउट होने के बाद स्ट्राइक पर तिलक आए, उन्होंने पहली बाल डाट खेली।

इसके बाद पांचवें ओवर की पहली और दूसरी बाल सूर्या ने फेस की। इसके बाद अपनी दूसरी बाल और पांचवें ओवर की तीसरी बाल पर तिलक ने अल्जारी जोसेफ के खिलाफ शानदार छक्का लगाया। बाल सीधे डीप मिडविकेट की ओर गई। इसकी अगली ही गेंद पर तिलक ने फिर डीप स्क्वायर लेग पर सिक्स लगाया। सूर्यकुमार यादव के डेब्यू इंटरनेशनल मैच में शुरुआती रन सिक्स से ही आए थे।

५. मुकेश कुमार और तिलक वर्मा को डेब्यू कैप

वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-२० मुकाबले से पहले भारतीय टीम के तेज गेंदबाज मुकेश कुमार और बल्लेबाज तिलक वर्मा को डेब्यू कैप मिली। कप्तान हार्दिक पंड्या ने तिलक वर्मा को कैप दी। टीम के सीनियर बालर युजवेंद्र चहल ने मुकेश कुमार को डेब्यू कैप दी।

६. पहले बल्लेबाजी करने उतरे चहल, फिर कप्तान ने वापस बुलाया

युजवेंद्र चहल १०वें नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे, लेकिन भारतीय टीम मुकेश कुमार को भेजना चाहती थी। चहल फिर वापस पवेलियन की ओर चले गए। मुकेश कुमार बल्लेबाजी करने के लिए आए, लेकिन अंपायर ने कहा कि चहल को ही आना होगा, क्योंकि वे पहले ही मैदान में आ चुके थे।